ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

ज्येष्ठ २०८० जून २०२३

पर्यावरण, योग, संगीत।
हैं जीवन के सच्चे मीत।।

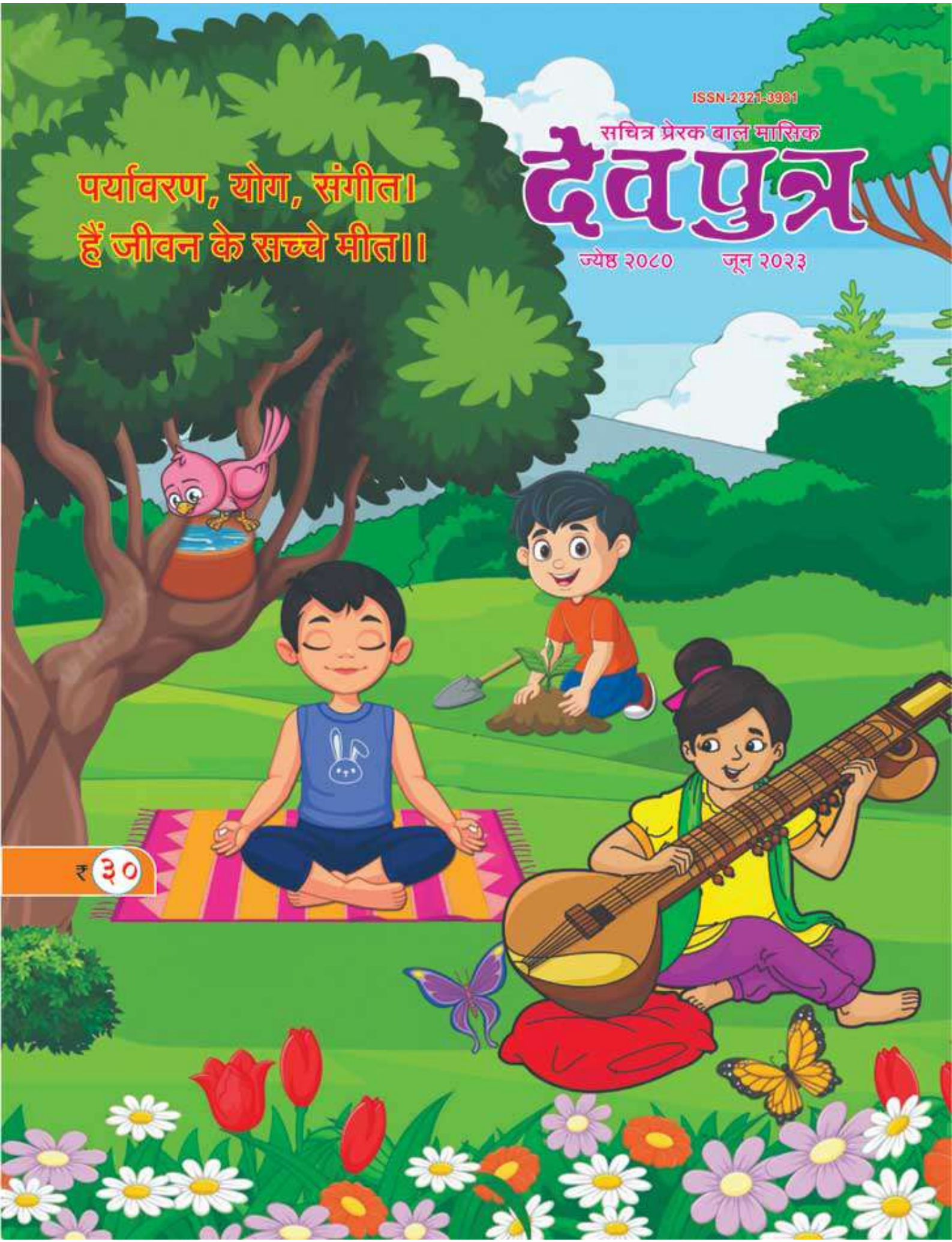

₹ ३०

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

3 साल बढ़े हैं सबसे आगे खड़े हैं

देख रहा है सारा देश-सबसे आगे मध्यप्रदेश

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

उपलब्धियां तीन वर्ष की

लाड़ली बहना योजना
23 से 60 वर्ष की महिलाओं को प्रतिमाह ₹ 1,000 की आर्थिक सुरक्षा

मुख्यमंत्री कौशल अप्रेंटिसशिप योजना
1 लाख युवाओं को प्रशिक्षण के साथ ₹ 1 लाख तक का स्टाइपेंड

लाड़ली लक्ष्मी योजना 2.0
44.50 लाख से अधिक लाड़ली बेटियाँ हुईं लाभान्वित

मुख्यमंत्री इंटर्नशिप योजना
4,600 से अधिक युवाओं को दी गई पेड इंटर्नशिप

उद्योग-व्यापार की उन्नति
ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट से ₹ 15,42,514 करोड़ के निवेश प्रस्ताव, औसत प्रति व्यक्ति आय 2003 में ₹ 11,718 से बढ़कर अब ₹ 1,40,583 हुई

बढ़ती विकास दर
16.43% की औसतन आर्थिक विकास दर के साथ समृद्ध राज्यों में शामिल

सशक्त अन्नदाता
मध्यप्रदेश गेहूँ निर्यात में नंबर 1, कृषि विकास दर 2022 में 18.89%

सुराज कॉलोनियां
भू-माफियाओं से मुक्त कराई गई 23 हजार एकड़ भूमि पर बनेंगे गरीबों के लिए आवास

सीएम राइज़ स्कूल
₹ 6,300 करोड़ से बन रहे 9,000 आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण विद्यालय

सांस्कृतिक गौरव की पुनर्स्थापना
उज्जैन में श्री महाकाल महालोक का लोकार्पण, ₹ 2200 करोड़ की लागत से ओंकारेश्वर में 'एकात्म धाम' की स्थापना, ओरछा में राम राजा लोक, चित्रकूट में दिव्य वनवासी रामलोक और सलकनपुर में श्री-देवी महालोक मंदिर प्रस्तावित

R. O. No.- D16024/23

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

ज्येष्ठ	२०८०	▪	वर्ष	४३
जून	२०२३	▪	अंक	१२

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फडके

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

आपने कभी सुना है कि शाकाहारी पशुओं ने चर कर पूरा जंगल ही समाप्त कर दिया हो या यह कि मांसाहारी पशुओं ने अपने शिकार इतने किए कि शेष प्राणियों की पूरी प्रजातियाँ ही नष्ट हो गई हों अथवा जलचरों ने जल स्रोतों का उपयोग इस प्रकार किया कि वे उपयोग योग्य ही नहीं बचे। बहुत खोजने पर अपवाद स्वरूप ऐसी घटना खोजना संभव हो पर यह सामान्य तौर पर नहीं होता है लेकिन मानव के कारण कई स्थानों पर जल, जंगल, प्राणी समाप्ति की कगार पर पहुँचे हैं। फिर भी 'मानव' अधिक बुद्धिमान सभ्य, सामाजिक और संवेदनशील प्राणी माना जाता है। वर्तमान में पर्यावरण की दशा को देखकर ये विशेषण कभी-कभी व्यंग्य प्रतीत होते हैं। पशु, पक्षी, जलचर आदि भी कभी अपने खान-पान आवास को सर्वथा नष्ट होने तक उपयोग-दुरूपयोग नहीं करते पर कई मानव ऐसा कर रहे हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है

क्षितिजल पावक गगन समीरा, पंच रचित अति अधम सरीरा।।

श्रीरामचरित मानस में यह बात भिन्न भाव एवं सन्दर्भों में होगी पर धरती, पानी, आग, हवा और आकाश इन पाँच तत्वों से निर्मित जो मानव, इन्हीं से रचित अन्य प्राणियों एवं शेष सृष्टि को अपने सुख, सुविधा व स्वार्थ के लिए जब नष्ट करने से न चूके तो वह 'अतिअधम' कहलाने योग्य तो है ही।

पर्यावरण असंतुलन और प्रकृति का अंधाधुंध शोषण आज सारे संसार की चिंता और भय का कारण है। भारत ने प्रकृति को माँ कहा है व पंच तत्वों को देवता। बच्चा माँ से दूध पीकर बड़ा होता है लेकिन इस प्रकार की माँ को हानि न पहुँचे। देवता से हम प्रसाद पाते हैं। प्रसाद श्रद्धा से लिया जाता है उसकी लूट-खसोट नहीं होती, उसके कण-कण का सम्मान होता है। प्रकृति माँ और पंचतत्व रूपी देवताओं से हमारा व्यवहार वैसा ही होना चाहिए।

बाबा तुलसी ने ही मानव शरीर को 'सुरदुर्लभ' भी कहा है। अब यह तो हमारे प्रकृति-चिंतन की दिशा तय करेगी कि हम 'अतिअधम' कहलाएँ या 'सुरदुर्लभ'।

आइए! कुछ ऐसा करें कि प्रसन्न रहें पंचतत्व, आनंदित रहे माँ प्रकृति और सुखी रहें उसकी सब सन्तानें।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- प्लास्टिक थैलियाँ और.. -डॉ. प्रकाशचन्द्र वर्मा २०
- प्लास्टिक की मछली -शिखरचंद जैन ३०
- संकोच का परदा -सनत ३८
- सिक्का -राजीव सक्सेना ४६

आलेख

- चक्रवर्ती सम्राट -तारादत्त जोशी ४१

छोटी कहानी

- नई सायकिल -हरिन्दर सिंह गोगना ०५
- योग दिवस -केसरी प्रसाद पांडे 'बृहद्' ०७
- जान बची -डॉ. विजयानंद २८

प्रसंग

- एक अद्भुत राज्याभिषेक -रामचंद्र शौचे ३६

एकांकी

- शाबास गोलू शाबास -हरदेव सिंह धीमान ०८

लघुकथा

- आवश्यकता -अमरसिंह शौल ११
- दो मुस्कान -राममूरत राही ३४

बाल प्रस्तुति

- बैलगाड़ी -सम्यका अग्रवाल ३२

कविता

- तेज थपेड़े लू के -मृगेन्द्र कुमार श्रीवास्तव १५
- रक्तदान -नरेन्द्रसिंह 'नीहार' २५
- वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई -लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव २५
- बेर -वागीश दिनकर ३७

स्तंभ

- शिशु गीत -कृष्णकांत तैलंग ०६
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १२
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक १६
- थोड़ी-थोड़ी डॉक्टरी -डॉ. मनोहर भण्डारी २२
- छः अँगुल मुस्कान - २२
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल २६
- विज्ञान व्यंग -संकेत गोस्वामी २९
- राजकीय मछलियाँ -डॉ. परशुराम शुक्ल ३४
- विस्मयकारी भारत -रवि लायटू ३५
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ४०
- अशोकचक्र : साहस का सम्मान - ४४
- आपकी पाती - ४८
- पुस्तक परिचय - ४९

चित्रकथा

- उफ् ये गर्मी -देवांशु वत्स २४
- दोस्त -संकेत गोस्वामी ३३
- घमंड सही नहीं -देवांशु वत्स ४५

बौद्धिक क्रीडा

- चित्र पहेली -राजेश गुजर १९
- पहेलियाँ -प्रवीण कुमार २३
- बढ़ता क्रम -देवांशु वत्स २३

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

नई साइकिल

– हरिन्दर सिंह गोगना

नकुल का विद्यालय उसके घर से काफी दूर था। वह पैदल ही विद्यालय जाता था। उसके अधिकांश सहपाठी अपनी–अपनी साइकिल पर विद्यालय आते थे। नकुल जब भी अपने पिता जी से साइकिल की माँग करता तो वह घर की आर्थिक तंगी की दिक्कत बताकर उसे चुप करा देते थे। बात भी ठीक थी, नकुल के पिता जी एक छोटी सी फैक्ट्री में काम करते थे। घर का गुजारा ही मुश्किल से चलता था, ऊपर से नकुल की पढ़ाई का खर्चा सो अलग।

लेकिन एक रोज नकुल की खुशी का ठिकाना न रहा। उसके पिता जी कहीं से उसके लिए एक पुरानी साइकिल ले आए। नकुल ने साइकिल को अच्छी तरह साफ किया और दूसरे सहपाठियों की तरह ही अब रोजाना विद्यालय जाने लगा। लेकिन उसकी यह प्रसन्नता अधिक दिनों तक टिक न सकी। साइकिल बहुत पुरानी होने के कारण कभी पंक्चर हो जाती तो कभी कोई और गड़बड़ हो जाती। जिससे वह कभी कभार तो साइकिल के चक्कर में विद्यालय भी देर से पहुँचने लगा था।

अब तो हाल यह था कि उसके सहपाठी दोस्त उसकी साइकिल का मजाक उड़ाने लगे थे। विशेषकर संजू तो उसकी साइकिल पर व्यंग्य कसने से जरा भी बाज न आता था। नकुल की साइकिल को खटारा बताकर वह अधिकांश ठहाका लगाता था। धनी घर का लड़का होने के कारण संजू के पास सबसे महँगी साइकिल थी।

एक रोज नकुल जब अपनी साइकिल पर घर जा रहा था तो संजू अपनी साइकिल उससे आगे भगाते हुआ बोला– ''मेरी साइकिल से दौड़ लगाओ...।'' नकुल के मन में भी संजू के लिए काफी गुस्सा था। उसने भी अपनी साइकिल तेज दौड़ानी शुरू की किन्तु यह क्या थोड़ी दूर जाते ही उसकी

साइकिल की चेन टूट गई। संजू के पीछे गर्दन घुमाकर देखा तो अपनी साइकिल की ब्रेक लगाकर नकुल की हालत पर जोर-जोर से हँसने लगा। नकुल साइकिल से नीचे उतरा और संजू के निकट आकर बोला- ''मेरी गरीबी का मजाक उड़ाते हो...?'' और इसी के साथ ही नकुल ने पूरे जोर से अपनी साइकिल हाथों में उठाई और संजू के बिलकुल पीछे फेंक दी। संजू को एक पल लगा जैसे नकुल उससे खीझ कर उसे डराने का प्रयास कर रहा है। लेकिन बात कुछ और ही थी।

दरअसल नकुल ने देखा कि एक बैल संजू को मारने के लिए उसके बहुत निकट आ चुका है। उसे बचाने के लिए कोई चारा न देखकर नकुल ने अपनी साइकिल बैल के आगे फेंक दी जिससे बैल के अगले पैर उसमें अटक गए और वह लड़खड़ाता हुआ नीचे गिर पड़ा व संजू की जान बच गई।

नकुल की सूझबूझ और फुर्ती से संजू के प्राण तो बच गए थे किन्तु उसकी साइकिल के चक्के बुरी तरह नकारा हो चुके थे। वह अपनी बेकार हो चुकी साइकिल को घसीटता हुआ एक तरफ करने लगा।

तभी अपनी साइकिल एक ओर खड़ी कर संजू ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए प्यार से कहा- ''अरे नकुल! मैं तो हमेशा तुम्हारा मजाक उड़ाता रहा और तुमने मेरी जान बचाने के लिए अपनी साइकिल की परवाह तक न की। मुझे क्षमा करना मेरे मित्र!''

''मित्र भी कहते हो और क्षमा की बात भी करते हो। अच्छा हुआ मेरी खटारा साइकिल तुम्हारे काम आई।'' कहते हुए नकुल मुस्कुरा दिया।

उसी संध्या संजू अपने पिता जी के साथ नकुल के घर आया। संजू के पिता जी ने भी नकुल को शाबासी देकर गले लगाया और उसे नई साइकिल देते हुए बोले- ''बेटा! मुझे गलत न समझना। मैं अपनी खुशी से तुम्हें यह उपहार देना चाहता हूँ। ताकि तुम दोनों मित्र एक साथ अपनी-अपनी साइकिल पर विद्यालय जाओ।'' नकुल ने संजू की ओर देखा तो उसने भी नकुल को नई साइकिल मित्रता का उपहार समझकर रखने के लिए विनती की। अब नकुल भी रोजाना नई साइकिल पर विद्यालय जाने लगा था, नए मित्र के साथ।

- पटियाला (पंजाब)

शिशुगीत

म्याऊँ म्याऊँ

- कृष्णकांत तैलंग

म्याऊँ-म्याऊँ, म्याऊँ म्याऊँ
कहती है क्या, मैं आ जाऊँ
आजा-आजा, दूध पिलाऊँ
आजा-आजा, खीर खिलाऊँ
चलकर दिल्ली, तुझे घुमाऊँ
बनी चिबिल्ली, कान हिलाऊँ
म्याऊँ-म्याऊँ, म्याऊँ म्याऊँ

योग दिवस

– केसरी प्रसाद पांडे बृहद्

कृतिका कक्षा ६ की छात्रा है। उसे ग्रीष्म अवकाश में योग दिवस पर निबंध लिखने के लिए गृहकार्य दिया गया था। मोबाइल के खेल में व्यस्त कृतिका भूल ही गई कि उसे योग दिवस पर निबंध लिखना है।

आज जब पूरे सामाचार–पत्र में योग दिवस ही योग दिवस दिख रहा था। यानी पूरा समाचार–पत्र ही योग दिवस घर गाँव से लेकर के सारी दुनिया योगमय थी। तभी कृतिका को याद आया कि उसे गृहकार्य पर योग दिवस का निबंध लिखना है। क्या करें कल से विद्यालय खुल रहे हैं। उसे आज ही निबंध लिखना पड़ेगा।

बस क्या था उसने समाचार–पत्र के साथ कापी पेन उठाया और समाचार–पत्र से योग दिवस के मुख्य–मुख्य बिन्दु छाँट–छाँटकर निबंध लिखने लगी। इतने में उसका बड़ा भाई मनु आया और बोला– ''निबंध नकल करके नहीं लिखा जाता अपने आस–पास की घट रही घटनाओं का वर्णन करना चाहिए।'' इस पर कृतिका का उत्तर था– ''भैया! मैं नकल नहीं कर रही हूँ। समाचार–पत्र पर दी हुई हेडिंग की अपने मन से व्याख्या कर रही हूँ।''

''तब समाचार–पत्र मुझे दे दो मैं भी अभ्यास करता हूँ।'' मनु ने कहा। कृतिका का उत्तर था– ''भैया! अभ्यास योग के मैदान में किया जाता है समाचार पढ़कर नहीं।'' नहले पर दहला देखकर मनु झेंप गया।

तभी कृतिका के पिता जी का कमरे में प्रवेश हुआ। कृतिका ने योग दिवस पर लिखा हुआ निबंध पिता जी को दिखाया। निबंध देखते हुए पिता जी ने कहा– ''कृतिका! तुम्हारा निबंध बहुत अच्छा है। तुम्हें बहुत अच्छे अंक मिलेंगे।'' फिर समाचार–पत्र पर ध्यान लगाये हुए मनु की ओर देखते हुए पिता जी ने कहा–

''देखो मनु! हर विद्या की एक नियमावली होती है। यानी नियम होता है। समाचार–पत्र से बिन्दु देखकर एक अच्छा निबंध तो लिखा जा सकता है किन्तु एक अच्छा योगाभ्यासी नहीं बना जा सकता। योग की गुणवत्ता तो अभ्यास पर ही आती है। योग केवल पढ़ने की चीज नहीं है। नियम और पद्धति के अनुकूल योग अभ्यास करने की विद्या है।

करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जावत ते, सिल पर पड़त निसान।।''

तब कृतिका और मनु पिता जी के द्वारा उदाहरणस्वरूप कहे वचनों में अभ्यास की महत्ता को समझने का प्रयास कर रहे थे।

– जबलपुर (म. प्र.)

शाबास गोलू, शाबास

– हरदेव सिंह धीमान

लीना – दीदी, दीदी, आज लोग पेड़ पौधे क्यों लगा रहे हैं?

दीदी– क्यों, क्या पेड़–पौधे लगाना कोई बुरी बात है? सभी तो पेड़–पौधे लगाते हैं।

लीना– हाँ–हाँ, पौधे तो सभी लगाते हैं, पर आज ही सब लोग पौधे क्यों लगा रहे हैं?

दीदी– आज से तुम्हारा क्या मतलब?

लीना– आज यानि जून की ५ तारीख। तेज गर्मी का दिन। जब अधिकतर क्षेत्रों में पीने के पानी का संकट रहता है तो इन छोटे–छोटे पौधों को जीवित रहने के लिए पानी कहाँ से आएगा? वन महोत्सव तो अगस्त माह में मनाया जाता है जब खूब सारी बरसात होती है। तब ही लगाए जाते हैं तरह–तरह के पौधे।

दीदी– ५ जून, हाँ–हाँ याद आया। आज विश्व पर्यावरण दिवस है। पूरे विश्व में आज के दिन पर्यावरण दिवस मनाया जाता है, जिसमें खाली भूमि पर पेड़–पौधे रोपे जाते हैं तथा पर्यावरण को बचाने, बचाए रखने की शपथ ली जाती है।

लीना– परंतु दीदी! पर्यावरण दिवस मनाया ही क्यों जाता है?

दीदी– लीना, जैसा कि तुम जानती हो कि किसी भी प्राणी के जीवित रहने के लिए शुद्ध जल व शुद्ध वायु की आवश्यकता है जो हमें वातावरण से ही मिलते हैं। जल पृथ्वी के नीचे एकत्रित चल भंडारों से बावडियाँ, चश्मे, कुएँ आदि के रूप में मिलता है तथा सर्दियों में पहाड़ों पर गिरने वाली बर्फ हमें नदी तालाब झरने आदि के रूप में जल प्रदान करते हैं। वर्षा हमें तालाब, तलैया, जोहड़ आदि के रूप में जल प्रदान करती है तथा शुद्ध वायु पौधों, वृक्षों, वनस्पतियों आदि से मिलती है। यह सभी वस्तुएँ पृथ्वी पर प्राकृतिक रूप से उपलब्ध हैं।

परन्तु सभ्यता के विकास के साथ–साथ मानव की जनसंख्या भी बढ़ गई। मनुष्य ने अपने सुख सुविधाओं के लिए बहुत सी विलासिता की वस्तुएँ पैदा कर ली, जिनकी पूर्ति के लिए धरती पर उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करना पड़ता है जिसके लिए अधिकांशत: कई पेड़–पौधे आदि का अंधाधुंध कटान कर कृषि योग्य भूमि तैयार की जा रही है। बड़ी–बड़ी फैक्ट्रियों की स्थापना हेतु भी पेड़–पौधों का कटान किया जाता है।

बड़ी–बड़ी फैक्ट्रियाँ हमारी सुख–सुविधा का सामान तो तैयार करती हैं परन्तु उनसे निकलने वाला धुआँ लगातार पर्यावरण को प्रदूषित करता रहता है। इतना ही नहीं वनों के कटान से हमारा प्राकृतिक संतुलन लगातार बिगड़ रहा है इन सभी बातों के कारण पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता पड़ी, जिसके संरक्षण के उद्देश्य से ही पर्यावरण दिवस मनाने की आवश्यकता पड़ी।

लीना– वह तो सब ठीक है पर जो पर्यावरण दिवस ५ जून को ही क्यों मनाया जाता है?

दीदी– संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष १९७० में ५ जून के दिन स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में पर्यावरण संरक्षण हेतु एक सम्मेलन किया था। इस सम्मेलन के दौरान ही संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की नींव भी पड़ी इसके चलते ही संयुक्त राष्ट्र ने प्रति वर्ष ५ जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का संकल्प लिया ताकि लोगों को हर वर्ष पर्यावरण में हो रहे बदलाव से अवगत करवाया जा सके। तुम्हें यह भी बता दूँ कि हर वर्ष पर्यावरण दिवस के लिए एक अलग से थीम देता है जिसके अनुसार ही हर देश में कार्यक्रम आयोजित होते हैं।

लीना– इस सम्मेलन में क्या भारत की ओर से भी कोई प्रतिनिधि आया था?''

दीदी– हाँ हाँ क्यों नहीं? देश की तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी ने इस सम्मेलन में भारत की ओर से भाग लियाथा।

लीना– जी दीदी! आपने बहुत ही अच्छी

जानकारी दी मैं तो समझा करती थी कि यह दिवस ऐसे ही मनाएँ जाते होंगे। पर दीदी! वह है ना गोलू, उसकी एक विचित्र सी आदत है।

दीदी– आदत? वह क्या करता है?

लीना– दीदी! वह जहाँ भी कोई फूल पौधे देखता है वह उन्हें झट से तोड़ लेता है। यदि कहीं खिले हुए फूल के पौधे मिलते हैं तो उन्हें वह बड़ी बेरहमी से तोड़कर अपनी कॉपी–किताबों के प्रत्येक पृष्ठों के मध्य रख लेता है। यदि उसका बस्ता देखें या उसकी कॉपी किताबें देखें तो सभी फूल पत्तियों के रंगों से रंगें रहते हैं। बस्ते की तो हालत ही खराब रहती है।

दीदी– देखो यह तो बहुत ही गंदी बात है। यह अच्छी आदत नहीं है, उसे तो समझाना होगा।

लीना– हाँ दीदी! कल भी जब हम सभी शाला से घर आ रहे थे तो रास्ते के आगे–पीछे जो प्राकृतिक रूप से लगे पौधे हैं उन्हें वह एक–एक करते उखाड़ रहा था। साथ ही कह रहा था कि उसे इन पेड़–पौधों की तोड़ने–मरोड़ने में बहुत ही आनंद आता है।

दीदी– यदि सभी बच्चे गोलू की तरह ही व्यवहार करने लग जाए तो एक न एक दिन हमारे आसपास के सभी पेड़ पौधे समाप्त हो जाएंगे। स्वच्छ हवा व स्वच्छ पर्यावरण कैसे मिलेगा? ऐसे बच्चे बड़े होकर कैसे अपनी जिम्मेदारियाँ निभाएँगे? इन्हें तो अभी से समझाना होगा?

लीना– दीदी दीदी! वह देखो, गोलू हमारी ओर ही आ रहा है। साथ ही उसके हाथ में एक उखड़ा हुआ पौधा भी है।

दीदी– यह तो ठीक हुआ कि गोलू इधर आ रहा है, नहीं तो हमें उसकी ओर जाना पड़ता। गोलू– नमस्ते दीदी! नमस्ते नीतू।

दीदी– नमस्ते गोलू। अरे! यह तुम्हारे हाथ में क्या है?

गोलू– कुछ नहीं दीदी! रास्ते में एक छोटा–

सा पौधा था, सोचा बड़ा होकर यूँ ही हमारा रास्ता रोक लेगा, इसलिए उखाड़ लाया हूँ।

दीदी– बहुत अच्छा किया तुमने गोलू! परंतु जो जड़ से तो नहीं उखड़ा, यह तो तने से ही टूट गया। जड़ तो इसकी अभी भी वहीं है, जो पुन: पनपकर बढ़ जाएगी।

गोलू– तब दोबारा तोड़ डालूँगा।

दीदी– अर्थात तुमने यह प्रण कर रखा है कि अपने आसपास कोई भी छोटा पौधा उगने नहीं दोगे। (गोलू का कान ऐंठते हुए) गोलू यदि मैं तेरे कान को मरोड़–मरोड़ कर खींच डालूँ तो तुम्हें कैसा लगेगा?

गोलू– (चीखते हुए) दीदी! दीदी! बहुत दर्द हो रहा है। छोड़ दो! छोड़ दो!!

दीदी– क्यों छोड़ दूँ गोलू? मैं तो तेरा एक कान खींचकर ही रहूँगी।

गोलू– नहीं दीदी, नहीं दीदी, ऐसा न करो? मुझे बहुत अधिक दर्द हो रहा है।

दीदी– (कान छोड़ते हुए) क्यों गोलू! क्या हुआ, बहुत दर्द हो रहा है न? जब तुम छोटे–छोटे पौधों को तोड़ते हो मरोड़ते हो, व ऐंठता है तो क्या उन्हें तब दर्द नहीं होता?

गोलू– (अपना कान सहलाते हुए) दर्द? छोटे–छोटे पौधों को कैसा दर्द? उन्हें दर्द क्यों होगा?

दीदी– देखो गोलू! धरती पर जितने भी पेड़–पौधें हैं उन्हें भी हमारी तरह ही दर्द होता है। यह अलग बात है कि वे मनुष्य, पशु, पक्षी आदि की भाँति चीख–पुकार नहीं कर सकते, परन्तु सर्दी, गर्मी, घाव–चोट इत्यादि को अनुभव करते ही हैं। और तो और पत्थर व धातु आदि निर्जीव वस्तुएँ भी ऐसा अनुभव करती है। पेड़–पौधे तो फिर भी सजीव होते हैं। इनकी अनुभूति तो हम स्वयं देख सकते हैं।

गोलू– अच्छा, ऐसा भी होता है?

दीदी– बड़ा नादान बने फिर रहे हो? क्या तुमने डॉक्टर जगदीशचंद्र बसु के बारे में नहीं पढ़ा है? उन्होंने अपने द्वारा विकसित यंत्रों के माध्यम से यह सिद्ध कर दिया है कि सभी जीव व निर्जीव वस्तुओं में भी संवेदना होती है। हमारी तरह वे भी सभी प्रकार की अनुभूति करते हैं।

गोलू– दीदी! जगदीचंद्र बसु के बारे में तो मैंने कई बार पढ़ा है, परन्तु मैंने इस पर कोई अधिक ध्यान नहीं दिया। हाँ एक बार मैंने स्वयं अनुभव किया कि रास्ते में आते हुए एक छोटे से पौधे से मैंने सभी पत्तियाँ व बीच से छाल को अलग कर दी थी जो कुछ दिनों में ही मुरझा गया था तथा बाद में सूख गया जो अभी वहीं पर है।

दीदी– जरा सोचो गोलू, उस पौधे की सारी पत्तियाँ तोड़ने व चारों ओर से छाल निकाल देने पर उस पौधे को कितनी पीड़ा हुई होगी? क्योंकि पौधे पत्तियों के माध्यम से सूर्य के प्रकाश से अपना भोजन लेते हैं तथा जड़ों के द्वारा भूमि से पानी व अन्य पोषक तत्व लेते हैं। वह छाल के अंदर बनी हुई बारीक–बारीक नालियों के माध्यम से पत्तों और टहनियों तक पहुँचता है, जिससे पौधा लगातार बढ़ता रहता है। तुमने तो उसे किसी ऐसे जानवर की तरह भूखा प्यासा मरने के लिए छोड़ दिया हो जिसके सभी अंग काट दिए हो। हमारे धर्म ग्रंथों में इसे एक पाप ही माना गया है, परंतु पर्यावरण की दृष्टि से भी पेड़ पौधे सभी प्राणियों के लिए उपयोगी हैं।

लीना– दीदी! यह तो इतना धूर्त है कि इसने न जाने कितने ही पेड़–पौधे तोड़–मरोड़ कर नष्ट कर दिए हैं। यदि किसी ने रोकने का प्रयत्न भी किया तो उसके साथ बुरी तरह से झगड़ता है।

दीदी– गोलू! यह तो बहुत ही बुरी बात है। मैंने तुम्हारा कुछ देर के लिए कान ऐंठ दिया तो कितना दर्द तुम्हें हुआ? तुमने तो ऐसे न जाने कितने पेड़–पौधों को सताया होगा?

गोलू– दीदी! मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई है। मैं तो समझता था कि पेड़–पौधों को तोड़ने–मरोड़ने से कुछ नहीं होता। मैं तो बस अपनी खुशी के लिए ऐसा किया करता था। मैं आज ही शपथ लेता हूँ कि भविष्य में कभी ऐसा नहीं करूँगा।

लीना– अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे।

दीदी– गोलू! शपथ खाने से कुछ नहीं होगा। तुम प्रण करो कि आने वाली बरसात में जब खूब वर्षा होगी तो उस समय अन्य बच्चों के साथ शाला के आसपास की खाली जमीन में पौधारोपण करोगे।

गोलू– जी दीदी! हमारी शाला में जो पर्यावरण समिति बना है, मैं कल ही उसका सदस्य बनूँगा और आने वाली बरसात में खूब पेड़–पौधे लगाऊँगा।

दीदी– शाबास गोलू शाबास!

(लीना, गोलू व दीदी तीनों गले मिलते हैं।)

– शिमला (हिमाचल प्रदेश)

लघुकथा

आवश्यकता

– अमर सिंह शौल

रामू किसान के खेत नदी के किनारे थे। जून का महीना था। नदी में भी पानी कम होता जा रहा था। उसने अपने एक खेत में सब्जियाँ उगा रखी थीं। उसके पास सिंचाई का कोई साधन नहीं था। वह नदी से पानी ढोकर अपने खेत की सिंचाई करता था। दिन प्रतिदिन बढ़ती गर्मी के कारण से उसके खेत के पास नदी में बने गड्डे का पानी भी सूखने की कगार पर था। अब केवल नाम मात्र ही पानी रह गया था गड्डे में। रामू बाल्टी लेकर अपने खेत की ओर सिंचाई करने के लिए गया। उसके साथ उसका दस वर्ष का बेटा बटुक भी था। रामू जैसे नदी की ओर गया तो उसने देखा कि गड्डे का पानी सूख गया है। केवल नाम मात्र के लिए ही पानी बचा हुआ था।

रामू जैसे ही खाली बाल्टी लेकर नदी से खेत की ओर वापस आने लगा। बटुक बोला– ''पिता जी! आप खाली बाल्टी लेकर क्यों जा रहे हैं। गड्डे में थोड़ा–सा पानी तो है।''

रामू पीछे की ओर मुड़ा। ''बटुक! इधर आओ।'' वह उसे गड्डे के पास ले गया। दोनों गड्डे के पास खड़े हुए थे।

''बेटा! जैसे हमें हवा पानी की आवश्यकता होती है। इन पानी के जीवों को भी पानी की अत्यधिक आवश्यकता होती है। रामू ने बटुक को समझाते हुए कहा– ''हमसे अधिक इनको पानी की आवश्यकता है। यदि हम इस पानी को निकाल लेंगे। तो ये सारे जीव बिना पानी से मर जायेंगे। हम कहीं ओर से पानी लाकर सिंचाई करने लेंगे।''

बटुक को बात समझ में आ चुकी थी।

– मंडी (हिमाचल प्रदेश)

नटखट बाल कविताओं के कवि : चन्द्रपाल सिंह यादव 'मयंक'

– डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

प्यारे बच्चो,

चन्द्रपाल सिंह यादव 'मयंक' (१ सितम्बर १९२५–२६ जून २०००) ने हिंदी बाल साहित्य को शिशुगीत, कविता, कहानी और नाटक विधाओं से समृद्ध किया। नटखटपन उनकी बाल कविताओं की विशेषता थी। उन्होंने ९ वर्ष की छोटी सी अवस्था में ही कविता लेखन प्रारम्भ कर दिया था। वे अपनी माता श्रीमती कमला देवी और पिता बाबू परमेश्वरी दयाल सिंह यादव के बड़े लाड़ले थे।

मयंक जी ने एम. ए. (हिन्दी), एल–एल.बी. की शिक्षा प्राप्त कर वकालत को व्यवसाय के रूप में अपनाया। यद्यपि उनका मन साहित्य सृजन में ही अधिक रमता था। पत्र–पत्रिकाओं में उनकी रचनाएँ खूब छपती थीं। उनकी पचास से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुईं। उनकी कुछ प्रमुख कृतियाँ हैं बाल कहानी संग्रह– **साहसी सेठानी (१९४६), परियों का नाच (१९६०), हिम्मतवाले (१९६२), सैर–सपाटा (१९६३), राज बेटा (१९६३), दूध–मलाई (१९६३), बज गया बिगुल (१९६३), देश के ये बलिदानी वीर (१९७१), हम देश की मुस्कान (१९७९), देश हमारा (१९८२), एक डाल के फूल (१९८४), भारत के रत्न भाग एक और दो (१९८४), पढ़–लिखकर तुम बनो महान (१९८७), पढ़ना है जी पढ़ना है (१९८९), भारत के संत (२००२), भारत के निर्माता (२००२)।**

पद्यकथा– **वीरांगना लक्ष्मी (१९४६), चिड़ियाघर (१९६३), जंगल का राजा (१९७१), बंदर की दुल्हिन (१९७८), मुनमुन सरकस (१९८१)।**

शिशुगीत– **हिन्दी गीतमाला भाग एक (१९६५), हिन्दी गीतमाला भाग दो (१९६६)।**

बाल एकांकी– **शरारती बच्चे (१९८६), सबको सन्मति दे भगवान (१९८५), एकता का महत्व (१९९५), हम अपना कर्त्तव्य करेंगे (१९९८)।**

यात्रावृत्त– **चलो करें हम सैर (१९८४)।**

कहानी– **बापू की अमरकहानियाँ (१९६९), घमंडी राजकुमारी (१९८६), रंग–बिरंगे फूल (१९८६), लोमड़ी मौसी और नटखट बंदर (१९९०) भारत माँ की पुकार (१९९२)।**

मयंक जी ने श्रेष्ठ बाल रचनाओं के संकलन भी संपादित किए– उनके द्वारा संपादित महकते फूल (१९६१), शिशु गीत (१९६५) और हिन्दी के नये शिशुगीत (१९६७) इत्यादि संकलन बाल साहित्य

की धरोहर हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने बड़ों के लिए भी गीत, कहानी और उपन्यास रचे।

बाल साहित्य के लिए उन्हें ढेरों सम्मान मिले। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने तो उन्हें कई बार पुरस्कृत और सम्मानित किया। मयंक जी की बाल कविताएँ सरल, सहज और आत्मपरक हैं। उनमें चिन्तन भी है और कल्पना भी। सबसे बड़ी बात कि उनमें बोध है। उनकी कविताएँ समझदार बालक की कविताएँ हैं। आइए, यहाँ उनकी कुछ लोकप्रिय बाल रचनाएँ पढ़ते हैं–

मिठाई खाई

मैंने बहुत मिठाई खाई,
कीड़ा लगा दांत में, भाई।
उसने मुझे रात भर काटा,
किया दांत में सैर–सपाटा।
इतना काटा, इतना काटा–
दैया! मेरी आफत आई।
मैंने रो–रो रात बिताई।
दैया! दैया! खूब मचाई।
पकड़े कान, कसम यह खाई
खाऊँगा अब नहीं मिठाई।

मिस्टर मच्छर

मिस्टर मच्छर रात–रात भर,
गाना गाते भन भन भन;
उनका गाना बड़ा सुहाना,
लेकिन उन से डरते हम।
कभी नाक में, कभी कान में,
वह चुटकी ले लेते हैं;
मच्छरदानी में घुस कर हम,
उन को चकमा देते हैं।
वह बाहर से झूम–झूम कर,
सा रे गा मा गाते हैं;
हम अन्दर, लेटे लेटे ही,
मुक्का उन्हें दिखाते हैं!

नानी का घर

कितना प्यारा नानी का घर,
हमको रहती मौज यहाँ पर
माँ नहीं डाँटने पाती,
हम सबकी चाँदी हो जाती।
पैसे खूब यहाँ हम पाते,
चाट–मिठाई जी भर खाते

ओले

पड़ पड़–पड़ पड़ गिरते ओले,
तड़–तड़ तड़–तड़ बूँदें,
हम सब बच्चे ओले जैसे,
धम–धम उछले कूदे।
छिटक–छिटक कर गिरते ओले,
ये हैं कंचे जैसे,
आसमान में इतने सारे,
जमा हो गए कैसे!

पानी

कई दिनों से बरस रहा है,
पान-पानी-पानी।
इस पानी के मारे भैया।
है भारी हैरानी।
भीगे कपड़े सूख न पाते,
रहते गीले-गीले।
अच्छी आफत पानी से सब
कमरे सीले-सीले।
कमरे के बाहर है पानी,
आँगन में भी पानी
क्या बादल ने सब पानी
बरसा देने की ठानी?

मौज उड़ाओ

भौंरा बोला: ''गुन-गुन-गुन!
सुन भई मेंढक! सुन भई सुन।
है दुनिया की उल्टी धुन।
गेहूँ के सँग पिसता घुन।
मेंढक बोला : ''टर-टर-टर।
बिल्कुल ठीक कहा मिस्टर!
जीवन बीते क्यों रोकर?
मौज उड़ाओ खुश होकर।

खूब नहाए हम

पानी बरसा झम-झम-झम,
डटकर खूब नहाए हम।
मम्मी बोलीं, आओ घर,
रहे नहाते हम बाहर।
फिर कसकर आ गया बुखार,
रहे कई दिन हम बीमार।
हमने पकड़े अपने कान,
लेंगे बात बड़ों की मान।

तारे

झिलमिल झिलमिल करते तारे।
आहा! लगते कितने प्यारे।
मानो बिखर गए हैं मोती।
जिनकी आभा झल-झल होती।
या हैं अनगिनती जंजीरें।
टूटीं फैल गए सब हीरे।
सारी रात चमकते हैं ये।
दम-दम खूब दमकते हैं ये।
देख सभी का मन ललचाता।
कोई नहीं इन्हें गिन पाता।
आसमान पर यदि जा पाता,
तो इनको बटोर कर लाता।
सभी साथियों को मैं देता।
अपना भी डिब्बा भर लेता।
घर में फिर सबको दिखलाता।
सब पर अपनी शान जमाता।

पहेली

टिक-टिक, टिक-टिक करती रहती।
हरदम आगे बढ़ती रहती।
हमें जगाना, समय बताना।
चलते जाना उसका काम।
कहती है आराम हराम
बोलो, बच्चो! उसका नाम?

- शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

तेज थपेड़े लू के

– मृगेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

दिन पहाड़ जैसे लगते हैं,
हमको, मई और जू के।
तानाशाही लगे दिखाने,
तेज थपेड़े लू के।।

सूरज दादा आग उगलते,
पवन जलाती गात।
तर, तर, तर, तर बहे पसीना,
बेचैनी दिन-रात।।
तप्त तवा सी धरती भैया,
देख लो चाहे छू के।
दिन पहाड़ जैसे लगते हैं,
हमको, मई और जू के।।

जीव-जंतु बेहाल बिना जल,
मुश्किल हुआ है जीना।
बूँद न मिलती पानी की,
बहता है अश्रु, पसीना।।
जल का बस एहसास दिलाते,
स्वेद बिंदु चू-चू के।
दिन पहाड़ जैसे लगते हैं,
हमको, मई और जू के।।

दिन चढ़ते ही सूनी हो गईं गलियाँ,
खाली हाट।
सूख गए सब ताल-तलैया,
वीराने हैं चाट।।
आये वर्षा रानी वो ही,
प्राण तनों में फूँके।
दिन पहाड़ जैसे लगते हैं,
हमको, मई और जू के।।
तानाशाही लगे दिखाने तेज थपेड़े लू के।।

– शहडोल (म. प्र.)

गोपाल का भूत

– तपेश भौमिक

एक दिन ऐसा हुआ कि राज दरबार में आलोचना के लिए कोई विशेष मुद्दा नहीं था। इसलिए कुछ गप–शप का वातावरण था। बातों–बातों में महाराज ने फूलों की बात छेड़ी तो गोपाल ने उत्साह से भरकर कहा– ''महाराज! मेरी पत्नी को आजकल फूलों का शौक खूब है। उसने आँगन में बहुत सारे गमलों में भाँति–भाँति के फूल लगाए हैं। उनमें क्या नहीं है! गुलाब, चम्पा, चमेली, कनेर, जुही, उड़हल, गेंदा, रातरानी...! और न जाने क्या–क्या!''

महाराज ने तुरंत उत्साह से भरकर कहा– ''वाह! वाह! तब देर किस बात की? कल सवेरे ही महारानी जी को साथ लिए तुम्हारे फूलों को देखने जाऊँगा।'' इस बात पर मंत्री और पंडित जी महाराज की ओर ऐसे देखने लगे जैसे उनका घोर अपमान हुआ हो। महाराज उनके चेहरों को ताड़ गए।

''आप लोगों को कुछ कहना हो तो कह सकते हैं।'' महाराज ने पूछा।

''महाराज! आप केवल गोपाल की बातों पर उसके घर पर जा रहे हैं, हमारे यहाँ भी तो फूल लगें हैं। हमने क्या दोष किया है?'' मंत्री और पंडित जी ने एक साथ कहा। इस पर महाराज को यह समझते देर नहीं लगी कि वे दोनों गोपाल से ईर्ष्या करते हैं, इसलिए ऐसा कह रहे हैं।

''महाराज! कल सुबह ही क्यों जा रहे हैं?'' मंत्री ने पूछा।

''मेरे शब्दकोष में 'विलंब' नाम की कोई चीज नहीं है; और हाँ अब जब तुम दोनों जुड़ गए हो तो मुझे यह निर्णय देना है कि किसकी बगिया सबसे सुंदर है? मैं सबसे अच्छे फूलों की मालकिन को पुरस्कृत भी करूँगा।''

बात चल ही रही थी कि तब तक रानी माँ आ गईं। उन्होंने कहा कि वह अपने गले का 'सीताहार' पुरस्कार में देंगीं क्योंकि उन तीनों की, पत्नियों ने फूल के पौधे लगाए हैं। इस बात की घोषणा के साथ–साथ ही मंत्री और पंडित के चेहरों पर चिंता की रेखाएँ खींच गईं।

सभा समाप्त होते ही मंत्री और पंडित दोनों अपनी–अपनी पत्नी के पास गए। पंडित के आँगन में फूल के दो–चार पौधे ही थे जिनसे प्रतिदिन फूल तोड़ लेती थीं पंडिताइन देवता पर चढ़ाने के लिए।

मंत्री के यहाँ कुछ भी न था। चूँकि उसे गोपाल फूटी आँखों न सुहाता था इसलिए उसने झूठ–मूठ ही कह दिया कि फूल तो उसके आँगन में भी हैं। उसे यह पता न था कि महाराज दूसरे ही दिन फूल की बगिया देखने चल निकलेंगे।

अब बच्चू पड़ गए फेर में। उन्होंने यह सोच लिया था कि महाराज को कुछ दिन के लिए रोक कर फूलों के पौधे उगा लेगा। लेकिन बात उल्टी पड़ गई।

मंत्री स्वभाव से उचक्का था ही, उसे याद आया कि पास ही भोला हलवाई के आँगन में कुछ गुलाब के पौधे लगे हैं। हलवाई गुलाब का शौकीन था। बस क्या था उसने शीघ्र ही कुम्हार के यहाँ से चार-पाँच गमले लाकर मिट्टी भर दी। अब रात के अँधेरे में भोला के आँगन से जल्दबाजी में कुछ गुलाब के पौधे उखाड़ लाया। शीघ्रता के कारण उसके हाथों में गुलाब के कुछ काँटे भी चुभे। रात-ही-रात में उसने गमलों में उन पौधों को लगाकर पानी छिड़क दिया और सोचने लगा कि रातभर में पौधे जम जाएँगे।

उधर पंडित ने दूसरी चाल चली। वह भोर होते ही गोपाल के घर के पास ही पेड़-पौधों के झुरमुट की आड़ में ठहर गया। यह सब मंत्री का सिखाया पढ़ाया

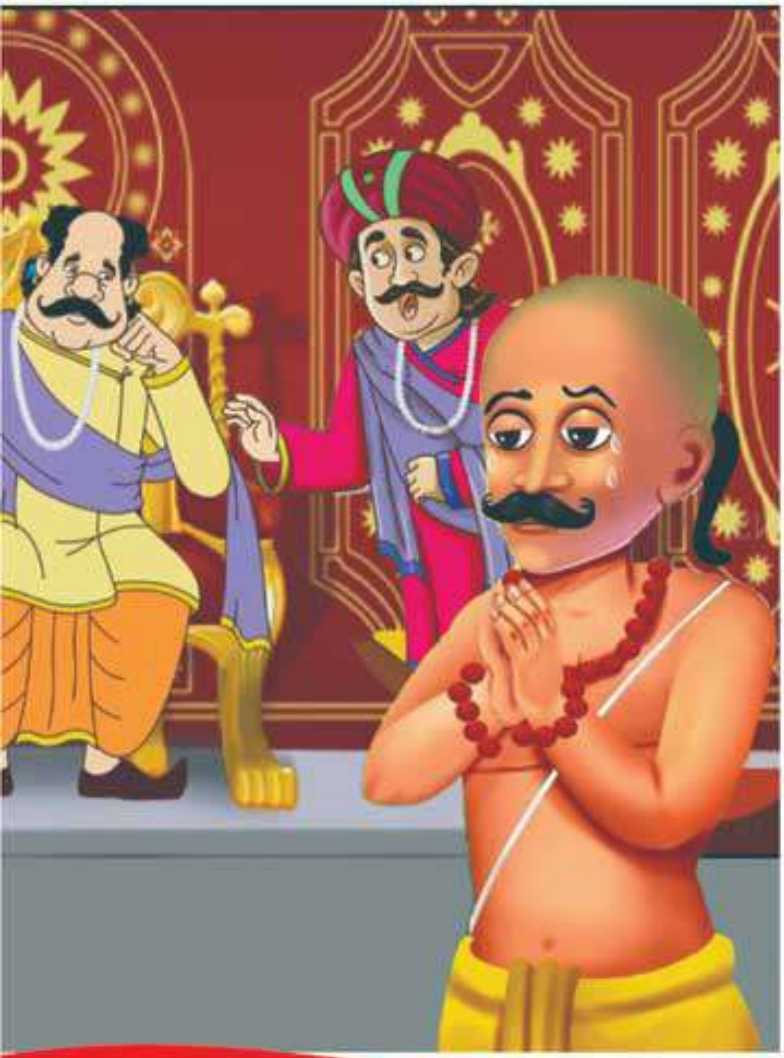

था। उसने अपनी गाय को टूटी हुई रस्सी गले में पहना कर प्रतीक्षा करता रहा।

उधर सुबह होते ही गोपाल की पत्नी ने गोपाल को भोला हलवाई के यहाँ भेज दिया ताकि वह बढ़िया मिठाई ला सके। महाराज और महारानी के आते ही उनका आदर-सत्कार जो करना था। फिर गोपाल की पत्नी ने घर की सफाई में ध्यान लगाया। उधर जल्दबाजी में गोपाल आँगन का दरवाजा खुला छोड़कर ही हलवाई के यहाँ चला गया। पंडित को इसी अवसर की तलाश थी। उसने अपनी गाय को गोपाल के आँगन में भीतर कर दिया और स्वयं झुरमुट की आड़ लेकर खड़ा हो गया।

गाय ने फूल के पौधों पर मुँह मारना प्रारंभ कर दिया। कुछ ही समय में फूल के पौधे तितर-बितर हो गए। गमले इधर-उधर औंधे पड़ गए। पूरे आँगन में जैसे भूकंप आ गया हो। गोपाल की पत्नी जब तक घर से निकलती तब तक गाय ने सारी बगिया उजाड़ दी थी। वह जब तक गाय को भगा पाती तब तक कुछ ही गमले साबूत बचे थे। वह दहाड़ मारकर रोने लगी। गोपाल भी घर लौट चुका था। उसने भी हलवाई के यहाँ से गुलाब के पौधों के गायब होना देख आया था। अब उसे यह समझते देर न लगी कि माजरा क्या है। लेकिन उसने कुछ न कहा। उसने केवल इतना ही कहा कि- ''आँगन का दृश्य ऐसा ही बना रहे।'' क्योंकि महाराज और रानी माँ के आने का समय हो चुका था।

महाराज और रानी माँ ने सबसे पहले मंत्री जी के यहाँ अपने कदम धरे तो उन्होंने कुछ नए गमलों में मुरझाए गुलाब के पौधे देखे। रानी माँ ने पूछा कि- ''गुलाब के पौधे मुरझाए हुए क्यों हैं?'' इस पर मंत्री जी की पत्नी की तो बोलती बंद हो गई। मंत्री जी ने आगे बढ़कर कहा कि- ''सुबह-सुबह अचानक धूप के असर से ऐसा ही होता है। दिन चढ़ते ही सब ठीक हो जाएगा।''

मंत्री ने पट्टी पढ़ाने का भरसक प्रयत्न किया पर रानी माँ की पारखी आँखों ने सच समझ ही लिया। महाराज ने कुछ न कहा। वे केवल मुसकुराते हुए वहाँ से चल निकले।

अब बारी थी पंडितजी के यहाँ जाने की। वहाँ दोर–चार पौधे थे। वहाँ कोई झूठ का कारोबार न था। पंडित मन ही मन यह सोचकर प्रसन्न हो रहा था कि पुरस्कार पंडिताइन को ही मिलेगा। सीताहार जब पंडिताइन पहनेगी तो कितनी सुंदर दिखेगी! एकदम रानी लगेगी वह।

अब महाराज और रानी माँ जब गोपाल के यहाँ पहुँचे तो उनके अचरज का कोई ठिकाना न रहा। आँगन में कितने ही फूलों के गमले तहस–नहस पड़े थे। फूलों के पौधे कुछ नष्ट हो गए थे तो कुछ जमीन पर बिछ गए थे। गोपाल–पत्नी ने रोते हुए महाराज और रानी माँ की अगवाई की और सारा हाल कह सुनाया। महाराज ने उसे ढाढस बँधाया एवं रानी माँ ने कहा कि– ''वह कुम्हार के यहाँ से नए गमले भिजवा देंगी। वह फिर से बाग सजाने में जुट जाए।''

उस दिन कुछ देर से सभा का लगना था पर महाराज पहले ही राजसभा में उपस्थित हो गए। जाकर देखा कि मंत्री और पंडित दोनों पहुँचकर अपने–अपने आसन पर इष्ट देव का नाम जाप कर रहें है। महाराज ने अपनी पूरी ईमानदारी से के साथ यह घोषणा की कि– ''मंत्री जी के आँगन में कुछ मुरझाए गुलाब के पौधे देखे, गोपाल के यहाँ सारे पौधे तहस–नहस देखे एवं एकमात्र पंडित जी के आँगन में तीन–चार साबूत पौधे देखे, जिनमें कुछ फूल भी लगे थे। अत: पंडिताइन जी को सीताहार पुरस्कार में दिया जाएगा।''

सारी सभा में सारी घटनाओं का खुलासा किया गया तो सभा में कुछ खलबली मच गई। केवल मंत्री और पंडित जी एक–दूसरे को दृष्टि बचाकर देख रहे थे। सभासदों ने कहा कि महाराज को पुन: विचार करना चाहिए। महाराज ने केवल यह कहा कि– ''कहीं कोई खोट है तो वे अपने विचार को रोक सकते हैं। बिना किसी प्रमाण के वे अपनी बात से पलट नहीं सकते।

गोपाल महाराज के सोच–विचारों पर अक्सर प्रश्न उठाया करता था। लेकिन इस बार उसने चुप रहना ही ठीक समझा। दो दिन बाद एक विशेष सभा बुलाकर पंडिताइन को पुरस्कृत करना था। गोपाल ने ठान लिया था कि इन दो दिनों में ही उसे रहस्य का किनारा करना होगा।

अगले दिन गोपाल राजसभा में न जाकर पत्नी के द्वारा यह सूचना भिजवा दी कि उसे अम्ल (एसिडिटी) की शिकायत है, बार–बार मैदान से घर और घर से मैदान आ–जा रहा है। महाराज ने शीघ्र ही राज वैद्य को भेज दिया। वैद्य ने दवा दी और कहा कि– ''उन्हें कुछ समझ में नहीं आ रहा है।''

गोपाल की बीमारी के समाचार से पंडित और मंत्री दोनों ही प्रसन्न हुए। वे यह सोच रहे थे कि एक बार सीताहार पंडिताइन को मिल जाए तो उनका किला फतह हो जाएगा। पंडित का झूठ–सच समझाना तो मंत्री के लिए बाएँ हाथ का खेल है। केवल गोपाल के आगे उसे पानी भरने की नौबत आ जाती है। इस बीच गोपाल के आने पर हो सकता है कि सारी बातें उल्टी पड़ जाए। मंत्री और पंडित दोनों ने आपस में गुप्त रूप से यह समझौता कर लिया था कि सीताहार जिसे भी मिले दोनों उसे गलाकर आपस में बाँट लेंगे। गोपाल को वह किसी भी सूरत में नहीं मिलना चाहिए।

रात होते ही गोपाल अपने एक पड़ोसी के यहाँ छिप गया और अपनी पत्नी को यह कहकर रोने–चिल्लाने को कहा कि उसका पति गायब है। वह जब मैदान गया था तब भूतों ने उठा लिया है। लोगों ने ऐसा विश्वास इसलिए कर लिया क्योंकि अब गोपाल जंगल में एक पेड़ के ऊपर से नाक से स्वर में चिल्ला कर कह रहा था कि पंडित और मंत्री दोनों की अब खैर नहीं।

फिर उसकी आवाज थम गई। पंडित का तो डर के मारे बुरा हाल था। उसने ही अपनी गाय के द्वारा गोपाल के आँगन के पौधों को नष्ट करवाया था।

रात के बारह बजते ही गोपाल ने एक काला कपड़ा ओढ़ लिया और पंडित के घर के पिछवाड़े की खिड़की पर जाकर उसे बुलाने लगा। ''ऐ पंडित! तूँने जो चाल चली, कल सुबह महाराज को जाकर सारी बातें बता देना, नहीं तो तेरी खैर नहीं। मैं तुझे चैन से जीने नहीं दूँगा।''

दूसरे ही दिन पंडित गिरता-पड़ता राज-दरबार में जाकर मंत्री की चाल का पर्दाफाश करते हुए स्वयं क्षमा माँग ली।

थोड़ी ही देर में गोपाल ने राजदरबार में अपनी हाजरी लगाई और महाराज से मंत्री के कूटचाल का पर्दाफाश करते हुए स्वयं दो दिन दरबार में न पहुँचने के कारण क्षमा माँग ली।

अगले दिन गोपाल-पत्नी को रानी माँ ने सीताहार पहनाकर पुरस्कृत किया और मंत्री को यह कहकर कि- ''आपकी इतनी आयु हो गई है लेकिन आपको ऐसे काम करते हुए लज्जा नहीं आती?'' महाराज ने केवल यह कहा ''तुमने गोपाल के आगे कभी हार नहीं मानी लेकिन वह तुमसे अधिक बुद्धिमान है।'' मंत्री के चेहरे का रंग उतर चुका था। पंडित ने उस दिन शपथ ली कि वह आगे कभी भी मंत्री के बहकावे में नहीं आएगा।

- गुड़ियाहाटी, कूचबिहार (पं. बंगाल)

चित्र पहेली

- राजेश गुजर

बच्चो! नीचे कौन-कौन से १२ वाद्य यंत्र हैं बताओ जरा?

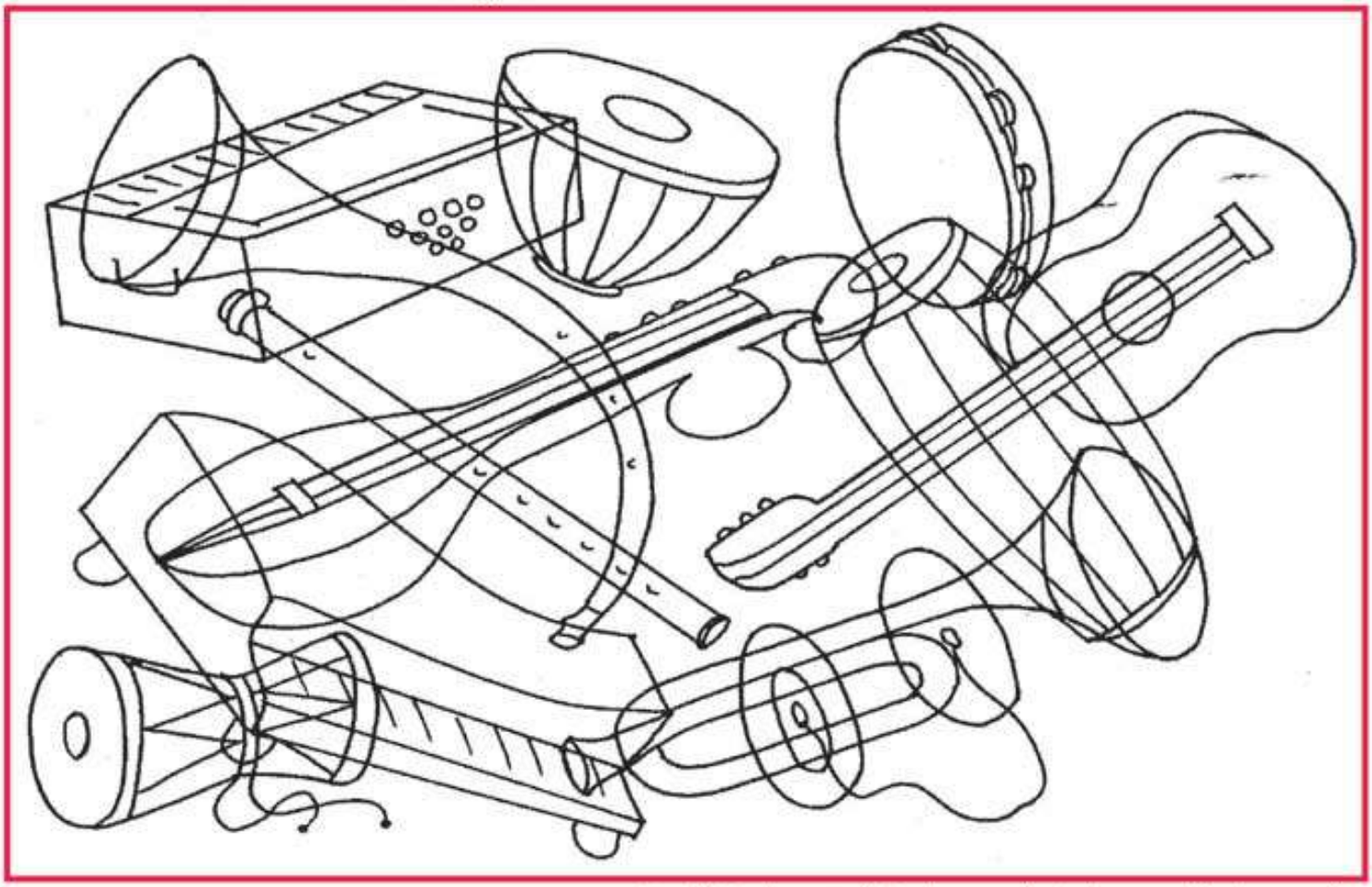

उत्तर :- १) शहनाई, २) तुरही, ३) पियानो, ४) हारमोनियम, ५) बाँसुरी, ६) वीणा, ७) मिटार, ८) तबला, ९) ढोलक, १०) डफली, ११) डमरू, १२) झाँझ।

कहानी : ०५ जून पर्यावरण दिवस

प्लास्टिक थैलियाँ और शेरा

– डॉ. प्रकाशचन्द्र वर्मा

जंबो हाथी ने बड़ी मेहनत से जंगल के सभी जानवरों से चंदा एकत्रित करके कचरा उठाने वाली टैक्सी खरीदी थी। वह नहीं चाहता था कि कोई जानवर अपने निवास स्थान के सामने कचरा डाले। लेकिन इसके बाद भी भोलू भालू प्लास्टिक थैली में कचरा भरकर रास्ते के बीच में डाल देता था।

गोरा और कालू सांड वहाँ आते। रास्ते के बीच कचरा देखकर उसे खाने लग जाते। आने–जाने वाले जानवरों को वहाँ से निकलना बहुत ही कठिन होता था। जंबो भी परेशान था। उसने भोलू को बुलाया और कहा– ''भोलू! सुनो! रास्ते के बीच में प्लास्टिक की थैलियों में कचरा भरकर मत फेंको। तुम हमारे सफाई अभियान को कलंकित कर रहे हो।''

''तो फिर कचरे को बिना प्लास्टिक की थैली के फेंक दिया करेंगे।''

''अरे! बिलकुल नहीं! जब कचरा उठाने वाली गाड़ी आये तो उसमें डाल दिया करो।''

भोलू चुपचाप सुनता रहा। जंबो उसे समझाकर चला गया। लेकिन चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता। दूसरे ही दिन भोलू ने पन्द्रह–बीस केले के छिलके रास्ते के बीचों–बीच डाल दिये।

कुछ ही देर में लपटू सियार उधर से गुजरा उसके पैर केले के छिलकों पर पड़े। वह फिसल गया। उसके पैरों में भारी चोंट आई थी। वह मारे क्रोध के चीख उठा। ''किसने केले के छिलके रास्ते के बीच में डाले हैं? मैं उसे नहीं छोड़ूँगा।''

कौन बोलता? भोलू पेड़ के पीछे खड़ा हँस रहा था। लपटू लंगड़ाता हुआ चला गया। दूसरे दिन वहाँ के समाचार–पत्रों में छपा था प्लास्टिक जहर है। प्लास्टिक की थैलियों में सामान बेचने व खरीदने पर सरकार दण्ड लगाएगी।

लेकिन परिस्थिति कुछ और ही थी। प्लास्टिक की रंग–बिरंगी थैलियाँ धड़ल्ले से बिक रही थीं। जंबो हाथी ने अपने मित्र डमरू गधे को सुझाया– ''क्यों न प्लास्टिक थैलियाँ सरकार बनाना ही बन्द कर दे तो यह समस्या समाप्त हो जायेगी।''

डमरू ने उसकी बात का समर्थन किया। लेकिन सरकार सब कुछ जानते हुए भी अनजान बन रही थी। कुछ दिनों तक तो सड़क के बीच कचरा नहीं डाला गया। जब रास्ता साफ देखा तो गोरा और कालू सांड गुस्से में बोले– ''आज हमारा भोजन नहीं है। किसने यह हिम्मत की है?''

जंबो उन्हें देख रहा था। तभी एक प्लास्टिक की थैली मय कचरे के भोलू ने उधर उछाली। थैली रास्ते के बीचों–बीच आकर पड़ी। फिर वही हालत हो गई, गोरा बड़ा प्रसन्न हुआ। वह उछलकर आया और

प्लास्टिक की थैली कचरे समेत चबा गया। कालू मुँह मलता रह गया।

दूसरे दिन गोरा पेट के दर्द से छटपटा उठा, उसने गैबी से कहा– ''मित्र! पेट में बड़ा दर्द हो रहा है, डॉक्टर के पास चलते हैं।''

कालू उसे शेरा डॉक्टर के पास ले गया। शेरा अपनी गुफा से निकला और उनकी समस्या सुनी।

शेरा ने कहा– ''लेट जाओ! मैं अभी अपने तेज नाखूनों से तुम्हारा पेट चीरकर देखता हूँ।''

गोरा लेट गया। शेरा ने तुरंत अपने पंजे से गोरा का पेट फाड़ डाला। प्लास्टिक की थैली मय कचरे के उसने बाहर निकाली। गोरा ठीक हो गया। लेकिन फाड़े गये पेट को कैसे सिला जाय। यह बात उस वन में कलुआ नामक कौआ ही जानता था। कलुए कौए को बुलाया। वह कहीं से एक डोरी उठा लाया और गोरा का पेट सिल दिया।

शेरा ने दूसरे ही दिन जंगल के सभी जानवरों

की बैठक बुलाई और प्लास्टिक थैलियों के नुकसान के बारे में जानकारी दी।

''लेकिन शेरा भाई! ये थैलियाँ बनती कहाँ हैं? उस पर ही रोक क्यों नहीं लगाते।'' गैबी बोला।

''हूँ, कहते तो ठीक है। मैं कल ही पता लगाता हूँ। पहली चेतावनी में अगर वह नहीं माने तो हम वहाँ पर हमला कर देंगे।''

सभी ने उसकी बात का समर्थन किया। शेरा ने सभी जगह खोजा लेकिन पता नहीं लगा पाया। तभी उसे जंगल में दूर एक गुफा में खर्र् की आवाज सुनाई दी। वह गुफा के पास गया और अन्दर झाँक कर देखा। कुटकुट गिलहरी अपने सहयोगियों के साथ एक मशीन पर बैठी थी। पास में ही एक बर्तन में कुछ वस्तु पिघल रही थी। हरमन सियार उसमें से एक लोटा भरकर मशीन पर डाल रहा था। वह पोलीथीन की थैली बनकर नीचे गिर रही थी। इस तरह देखते ही देखते करीब सौ थैलियाँ बना दी गई।

अब क्या था शेरा शेर ने जंबो हाथी, कालू कौआ, चींटे–चींटियों की फौज को सारी कहानी कह सुनाई। सभी ने उसकी बात का समर्थन किया। सभी बड़े जोश से उस गुफा की ओर चल पड़े, जहाँ प्लास्टिक की थैलियाँ बन रही थी। सभी जोर–शोर से हरमन सियार और कुटकुट गिलहरी की टीम पर टूट पड़े। शेरा ने मशीन के टुकड़े–टुकड़े कर दिये। कुटकुट गिलहरी और हरमन सियार जान बचाकर भागे।

शेरा ने जंगल के सभी जानवरों को बुलाया। प्रेस फोटो ग्राफर्स भी आ गये थे। शेरा ने कहा– ''केवल नारों से प्लास्टिक की थैलियाँ बन्द नहीं होंगी। इसके लिए कुछ करना होगा। लगता है प्लास्टिक बनाने वाले अधिकारियों से मिले हुए हैं। यह अब नहीं चलेगा, हाँ।''

सभी जानवर नाचते–कूदते चले गये।

– बीकानेर (राजस्थान)

घायल आदमी को अस्पताल कैसे ले जावें?

– डॉ. मनोहर भण्डारी

राजाराम ने पूछा– किसी खिलाड़ी की हड्डी टूट जाये और वह बेहोश हो जाए तो क्या करना चाहिए?

रामू ने कहा– सबसे पहले घायल आदमी को बिना कहीं से मोड़े सावधानी से उठाएँ। चार-पाँच आदमी हर अंग को सहारा दें। लकड़ी की नसैनी या सीढ़ी होती है। उसे उलटकर रख दें। उस पर दरी या बिछौना बिछा दें। घायल आदमी को सावधानी से उस पर लिटा दें।

रामू ने आगे बताया– पैरों वाला भाग थोड़ा ऊँचा कर दें। खून निकल रहा हो तो उसे रोकने का प्रयत्न करें। कपड़े ढीले कर दें। हवा करें, जहाँ की हड्डी टूटी हो, वहाँ लकड़ी, बाँस की खपच्चियाँ चारों ओर लगाकर कपड़े से बांध दें।

राजाराम ने पूछा– फिर क्या करना चाहिये?

रामू ने कहा– यदि होश में आ जाये, तो पतली चीजें (दूध, चाय, शरबत) पिलाएँ और उसी समय डॉक्टर के पास ले जावें। यदि बेहोश हो तो उसे एक कपड़ा लपेट कर सीढ़ी से बांध दें। जिससे ले जाते समय हिले-डुले या गिरे नहीं। डॉक्टर के पास ले जाने

में देरी करने पर घायल आदमी मर सकता है। इतना कहकर रामू चुप हो गया।

गंगाधरजी ने कहा– जब हमारे यहाँ खेल होंगे तब रामू और मोहन यहीं पर रहेंगे। पर हम यह चाहते थे कि आप सभी को खेल के समय लगने वाली चोटों का उपचार करना चाहिए। ताकि किसी दूसरे गाँव में खेलों का मेला लगे तो यह कौशल काम आए। यदि आप रामू और मोहन से कुछ और जानना या सीखना चाहें तो वे आपको सिखा देंगे। सभी बहुत प्रसन्न हुए।

– इन्दौर (म. प्र.)

छः अँगुल मुस्कान

डॉक्टर– आपके आगे के तीन दाँत कैसे टूट गए।

रोगी– पत्नी ने कड़क रोटी बनाई थी। एक रोटी खाते-खाते ही दाँत हिल गये थे।

डॉक्टर– तो खाने से इंकार कर देते।

रोगी– जी, वही तो किया था, फिर तीन दाँत टूट गये।

*****

शिक्षक– बबलू! बताओ आठ लोगों के बीच छः आमों को तुम कैसे बाँटोगे?

बबलू– माँ को देकर उसका मैंगो शेक बनवा लूँगा। फिर उसे आठ लोगों के गिलास में बराबर बाँट दूँगा।

*****

टिंकू की माँ तुम अपने बेटे की पढ़ाई पर ध्यान क्यों नहीं देती हो?

क्यों, पिंटू की माँ! तुम्हें क्या दिक्कत है?

पिंटू ने परीक्षा में टिंकू की नकल की थी और वह फेल हो गया।

बाल पहेलियाँ

– प्रवीण कुमार

(१) सब्जी में रंग है लाती
दूध में भी डाली जाती
शादी में उबटन बन जाती
बोलो क्या है कहलाती

(२) हरी सीप है
काले मोती
स्वाद और महक
गजब की होती

(३) कानों में संगीत सुनाए
एक बूंद खून पी जाए
रोज रात को तुम्हें सताए
सयाना वो जो नाम बताए

(४) लाल रंग है खून सा
भोजन का स्वाद बढ़ाए
ज्यादा हो जाए तो
सबका मुँह जल जाए

(५) बारिश में काम ये आए
तेज धूप में साथ निभाए
एक टांग पर ओढ़ लबादा
घर पर हो तो सो जाए

(६) एक सांप है ऐसा
जिसमें बहुत हैं छेद
सांप कमर से लिपटा
जरा बताओ भेद

(७) रंग–बिरंगी जैसे परी
फूलों पर है मंडराती
पास इसके मत जाओ
घबराकर है उड़ जाती

– रेवाड़ी (हरियाणा)

उत्तर– १) हल्दी, २) इलायची, ३) मच्छर, ४) लाल मिर्च, ५) छाता, ६) बेल्ट, ७) तितली।

बढ़ता क्रम 20

देवांशु वत्स

1. संबंध कारक का चिह्न।
2. लकड़ी, ईंधन।
3. व्याकुल, भयभीत।
4. मद्य, कोयल, सरस्वती।
5. कायापरिवर्तन, बहुत बड़ा हेरफेर।
6. बहुत क्रोध से बोलना।

1.	का					
2.	का					
3.	का					
4.	का					
5.	का					
6.	का					

उत्तर: 1. का, 2. काठ, 3. कातर, 4. कादंबरी, 5. कायापलट, 6. काटने दौड़ना।

उफ! ये गर्मी!!

चित्रकथाः देवांशु वत्स

कविता (विश्व रक्तदाता दिवस : १४ जून)

रक्तदान

– नरेन्द्र सिंह 'नीहार'

कभी अचानक चोट लगे,
खून बहुत–सा बह जाये।
रक्त अल्पता की बीमारी,
रक्तदान ही प्राण बचाये।
हँसकर रक्तदान करे जो,
दानवीर हैं कहलाते।
संकट की घड़ियों में अक्सर,
देवदूत हैं बन जाते।
थकान शिकन या कमजोरी,
रक्तदान से नहीं होती।

नई चेतना नई ऊर्जा,
नए रक्त में है बहती।
नियमित रक्तदान करने से,
चेहरे पर रंगत आती।
जो बाँटेगा सच्ची खुशियाँ,
उसकी झोली भर जाती।
पुण्य कर्म औ' महादान है,
रक्तदान करते रहना।
जीवन दाता कहलाओगे,
सफल सार्थक हो जीना।

– नई दिल्ली

बलिदान दिवस : १८ जून

वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई

– लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

मणिकर्णिका, मनु और छबीली जैसा था प्यारा नाम,
लक्ष्मीबाई के नाम से प्रसिद्ध, क्रांति का दिया पैगाम।
मोरोपंत तांबे पिता और माँ भागीरथीबाई की संतान,
अँग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई में, वीरता का अनूठा आयाम।
१९ नवम्बर १८२८ को काशी में, मनु का हुआ अवतरण,
झाँसी नरेश गंगाधर राव नेवलकर से वैवाहिक बंधन।
प्रथम पुत्र की मृत्यूपरांत, दामोदर राव को गोद लिया,
जब चार साल की थी लक्ष्मीबाई, माँ का हुआ निधन।
अँग्रेजों ने झाँसी राज्य हड़प लिया, पर हिम्मत न हारी,
खजाना हुआ जब्त, रानी के कटौती का फरमान जारी।
मजबूर होकर झाँसी का किला छोड़, 'रानी महल' गई,
प्रण लेकर झाँसी राज्य की, रक्षा करने के लिए तैयारी।
२९ वर्ष की आयु में, अँग्रेजों के विरुद्ध युद्ध का ऐलान,
ग्वालियर के 'कोटा की सराय' में, लड़ाई हुई घमासान।
'मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी' रानी का प्रसिद्ध हुआ नारा,
लड़ाई में १८ जून १८५८ को, लक्ष्मीबाई हुई बलिदान।
रानी लक्ष्मीबाई कहलाने लगीं, झाँसी की वीर मर्दानी,
झाँसी से अँग्रेजों को बाहर करने को, मन में थी ठानी।
अँग्रेजों से लड़ाई में रानी ने, अद्भुत रणकौशल दिखाया,
इतिहास में दर्ज हुई, लक्ष्मीबाई के वीरता की कहानी।

– बस्ती (उ. प्र.)

टैंक में आ गया पानी

– रजनीकांत शुक्ल

देश के उत्तरपूर्व का राज्य मिजोरम के पूर्व में म्यांमार देश और परिश्चम में बांग्लादेश की सीमाओं से जुड़ा हुआ है। इस राज्य की राजधानी आइजोल है। इसी राजधानी आईजोल का सबसे घनी आबादी वाला क्षेत्र लाइपुइटलौंग है। यह इसी नाम की पहाड़ी पर स्थित है। इसी पहाड़ी क्षेत्र में यह घटना घटी थी।

वह वर्ष १९९९ के अक्टूबर महीने की चौबीस तारीख थी। जब वहाँ के निवासी बिआकमाविया का बेटा लालनिलिआना अपने कुछ मित्रों के साथ खेल रहा था। लालनिलियाना की आयु उस समय तेरह वर्ष की थी और उसके साथ खेलने वाले बाकी सारे साथी भी लगभग उसकी ही आयु के थे। वे सारे बच्चे जिस समय खेलने में मस्त थे। तभी उन्हें पास में कुछ और दूसरे बच्चों की आवाजें आती सुनाई दीं। वे बच्चे उनके खेलने की जगह से दूसरी ओर पानी के बड़े जलाशय के पास खेल रहे थे। उनकी आती आवाजों में घबराहट भरी लग रही थी ऐसा लग रहा था कि जैसे वहाँ कोई दुर्घटना हो गई हो। उन बच्चों की आवाजों में सहायता की करुण पुकार का आग्रह था।

जिसे सुनकर लालनिलियाना अपना खेल छोड़कर तेजी से उस ओर दौड़ पड़ा। उसके पीछे–पीछे उसके बाकी साथी भी जानने के लिए दौड़े कि आखिर वहाँ हुआ क्या है? सबसे आगे–आगे जा रहे लालनिलियाना ने वहाँ जाकर देखा कि कुछ बच्चे पानी के बड़े टैंक के पास खेल रहे थे। तेजी से लालनिलियाना को अपनी ओर आया देखकर वे बच्चे तुरन्त उसके पास आए और बिना कुछ बताए उसे अपने साथ उस ओर ले गए जहाँ उनका एक साथी जोनाथ लालहुलियाना पानी में डूब रहा था। उन्होंने बताया कि दुर्घटनावश जोनाथन पानी के उस टैंक में जा गिरा था और अब वह उस भारी भरकम टैंक से बाहर नहीं निकल पा रहा था। वे सभी साथी बच्चे असहाय उसी के बाहर न निकल पाने से घबराए हुए थे और सहायता के लिए चिल्ला रहे थे।

लालनिलिआना ने एक पल स्थिति को देखा उसने तुरन्त नीचे टैंक में झाँककर देखते हुए डूबते उतराते जोनाथन लालहुलिआना को सांत्वना दी कि वह चिंता न करें वह अभी उसे बचा लेगा। फिर उसने बिना अपनी जान की परवाह किए उस टैंक में जोनाथन लालहुलिआना को बचाने के लिए कूद गया। टैंक के उस पानी में कूदते ही वह तैरता हुआ जोनाथन लालहुलिआना के पास गया और उसने उसे पकड़ लिया। लालनिलियाना का सहारा मिलते ही बड़ी देर से उस पानी में फँसे परेशान हाल जोनाथन लालहुलिआना की जान में जान आई। उसने कसकर लालनिलिआना को पकड़ लिया। लालनिलिआना ने उसे सहारा दिया और पकड़कर टैंक के किनारे की ओर लेकर आ गया।

टैंक के ऊपरी किनारे से झाँकते बच्चे

उत्सुकता से उन दोनों को देख रहे थे। लालनिलिआना ने जोनाथन लालहुलिआना को सहारा देकर ऊपर की ओर चढ़ाया ताकि उसे ऊपर खड़े बच्चे पकड़कर खींच लें। दो तीन बार के प्रयासों में बच्चों ने उसे पकड़ लिया और ऊपर खींच लिया।

जोनाथन लालहुलिआना के सुरक्षित ढंग से टैंक से बाहर आ जाने से वह और उसके साथ के बच्चे खुशी से उछल पड़े। लेकिन लालनिलिआना जोनाथन लालहुलिआना की जगह पर नीचे फँस चुका था। वह टैंक से बाहर निकलने की युक्ति सोचने लगा। टैंक से बाहर निकलने के लिए ऊँचाई अधिक थी। किसी रस्सी या कोई ऐसी चीज जिसके सहारे वह बाहर आ पाता उसकी इस समय उसे आवश्यकता थी। लालनिलिआना को उसमें से बचने के लिए कुछ न कुछ अवश्य मिल जाता। किन्तु दुर्भाग्य से उसी समय टंकी में पानी का बहाव तेज हो गया। लालनिलिआना ने उससे बचने की भरसक कोशिश की। किन्तु जब तक कोई बाहरी सहायता उसे मिल पाती यह वह बच पाता। पानी के तेज बहाव ने उसे टैंक में डुबो दिया। वह जीवित टैंक से बाहर न आ सका।

जब तक उसे कोई सहायता मिल पाती उसका शरीर निष्प्राण हो चुका था। इस तरह लालनिलिआना ने अपनी जान देकर जोनाथन लालहुलिआना की जान बचा दी थी। यह सर्वोच्च किस्म का बलिदान था। लालनिलिआना ने जब जोनाथन लालहुलिआना को टैंक में फँसे हुए रोते देखा तो उसका कोमल हृदय उसे बचाने के लिए तड़प उठा।

जोनाथन लालहुलिआना को बचाने के क्रम में उसे लग रहा था कि इस काम में बहुत खतरा है किन्तु फिर भी उसने उस खतरे की परवाह नहीं की और उसको बचाने के लिए टैंक में कूद पड़ा।

इस तरह लालनिलिआना ने अपार साहस का परिचय दिया था। उसकी इस दूसरे को बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डालने की भावना को सम्मानित करने के लिए उसका नाम वीरता पुरस्कार के लिए भेजा गया। उसे मरणोपरांत वर्ष २००० के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया। अब लालनिलिआना तो पुरस्कार की दुनिया से दूर जा चुका था। किन्तु उसकी भावना को बताने के लिए दूसरों को प्रेरित करने के लिए उसके पिता को इस पुरस्कार को लेने के लिए राजधानी दिल्ली आमंत्रित किया। जहाँ देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने लालनिलिआना का यह पुरस्कार उसके पिता को सौंपा। पुरस्कार लेते समय उसके पिता की आँखें लालानिलिआना की याद में छलक आईं।

नन्हे मित्रो!

हमने दे दिया अपना जीवन, कोई हमें क्या देगा ?
अपना अपना करेंगे जब सब, कोई इधर देखेगा।
सीख पाए तो उसे मुबारक हो, उसके क्या कहने,
देकर जो पाया है, उसका मोल पा लिया मैंने।

– दिल्ली

जान बची

– डॉ. विजयानन्द

एक जंगल में लोमड़ी, खरगोश और बंदर आसपास ही रहते थे। तीनों की बहुत अच्छी दोस्ती थी। कहीं भी जाते तो साथ जाते। बंदर, खरगोश और लोमड़ी की हर समय सहायता करता था। किसी भी परेशानी में पड़ने से पहले पेड़ों पर दौड़–दौड़कर उन्हें जानकारी दे देता और इन दोनों को उस रास्ते पर जाने से मना कर देता था, किन्तु यह सभी जानते हैं कि लोमड़ी बहुत चालाक होती है। एक दिन खरगोश दौड़कर अमरुद के पेड़ पर चढ़ गया। बंदर भी अंगूर के पौधे से एक बड़ा गुच्छा अंगूर का तोड़कर बगल के नीम के पेड़ पर जा बैठा। लोमड़ी भी अमरुद के पेड़ के नीचे बैठी रही। खरगोश, अंगूर के फलों के डंठल कुतरता रहा और अंगूर गुच्छे के साथ नीचे गिरते रहे। लोमड़ी बड़े चाव से अंगूरों को खाती रही। बंदर ने भी अंगूर का एक बड़ा गुच्छा पुन: तोड़ लिया था और नीम के पेड़ पर बैठकर आराम से खा रहा था।

इतने में जंगल के पेड़ों–पौधों से सरसराहट की आवाज आई। बंदर ने ध्यान से देखा, सामने से बाघ चला आ रहा था। बंदर ने चिल्लाना शुरु किया।

....भागो–भागो, बाघ आया.... बाघ आया।

लोमड़ी चालाक थी और बाघ शब्द सुनते ही तेजी से भाग चली। खरगोश ने सोचा–बाघ अभी दूर होगा, तब तक कुछ और अंगूर खा लिया जाय। बंदर इस पेड़ की डाली से उस पेड़ की डाली पर कूदता रहा और खरगोश को बार–बार चेतावनी देता रहा। 'भागो भागो, बाघ आया, बाघ आया। लेकिन खरगोश लालच में पड़ गया और अंगूर के गुच्छों से अंगूरों को कुतर–कुतर कर खाता रहा।

खरगोश भी जान बचाने के लिए बहुत तेजी से भागा और जाकर अपने बिल में छिप गया। बाघ जब तक बिल तक पहुँचता, खरगोश बिल के अंदर जा चुका था। बंदर पेड़ पर बैठे सब तमाशा देख रहा था। शेर ने जमीन पर कई बार पंजा मारा, गुर्राया। बिल के पास बैठकर खर्राटे भरे। बंदर इस पेड़ से उस पेड़ पर कूद–कूदकर, चिल्ला–चिल्लाकर बाघ के बैठे रहने की जानकारी लोमड़ी और खरगोश को देता रहा। थक–हारकर अंत में बाघ जंगल में वापस चला गया। तब बंदर पेड़ से नीचे आया, झाड़ियों में छुपी लोमड़ी भी दौड़ कर बाहर आ गई। जब इन दोनों ने खरगोश को बुलाया। खरगोश को विश्वास हो गया कि बाघ वापस चला गया है। तब ये दोनों मित्र बिल के पास आए हैं, तभी वह बाहर आया। तब लोमड़ी ने कहा– तुम अंगूरों के लालच में पड़ गए, बहुत साफ–साफ बचे, वरना बाघ तुम्हें पकड़कर खा जाता। बंदर ने कहा– अब ऐसी गलती न करना, समझे। जान बची तो लाखों पाए।

– प्रयागराज (उ. प्र.)

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

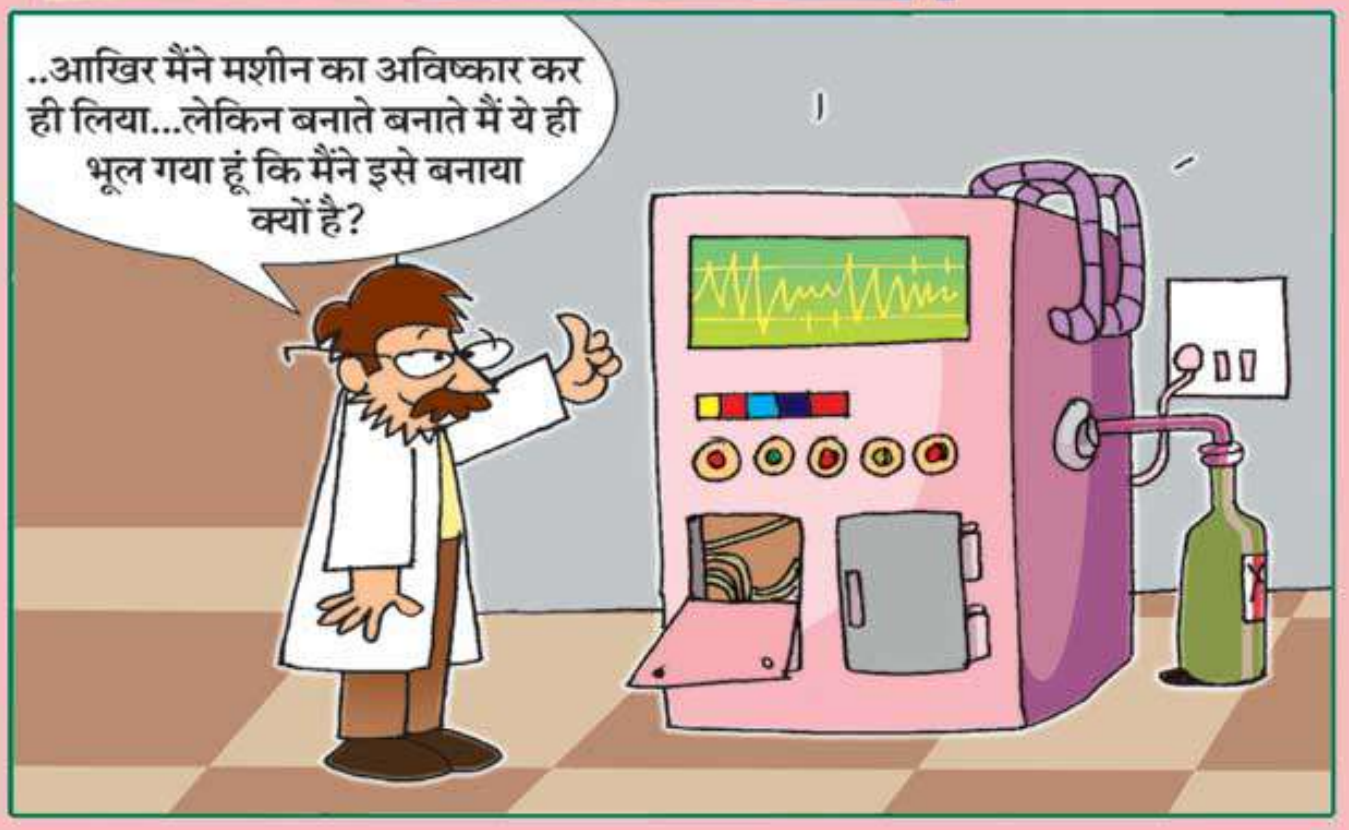

प्लास्टिक की मछली

– शिखर चंद जैन

न चाहते हुए भी स्वयं के पास पिता जी को टोकना पड़ा, ''हाँ डालो खूब प्लास्टिक। इससे समुद्र में प्लास्टिक की मछली और कछुए बनेंगे।''

कोल्ड ड्रिंक पीकर उसकी बोतल और चिप्स के पैकेट को बड़ी बेपरवाही से समुद्र की लहरों की ओर उछाल दिया था स्वयं ने। उसकी यह गतिविधि पिता जी को बहुत बुरी लगी।

जब पिता जी ने टोका तो उनका व्यंग समझकर स्वयं ने कहा– ''क्या पिता जी! आप भी! इतने बड़े समंदर में इतनी–सी बोतल और पैकेट से क्या फर्क पड़ने वाला है? अभी बह जाएँगे।''

पिता जी बोले– ''बेटा! माना कि हम यहाँ मौज मस्ती करने और पिकनिक मनाने आए हैं, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि हम उसी समंदर को गंदा, बोझिल और विषाक्त कर दें जिसके कारण से यहाँ मजे और सैर सपाटा कर रहे हैं। हमें क्या अधिकार है कि हम इसमें रहने वाले जीव–जंतुओं की जान ले लें?''

''अरे! आप तो बहुत गंभीर हो गए पिता जी! एक बोतल और इस छोटी–सी पैकेट से समुद्र में जीव जंतु कैसे मर जाएँगे? इस अथाह जलराशि में इनका तो कहीं पता भी नहीं चलेगा।'' यह आवाज स्वयं की बड़ी बहन श्वेता की थी जो पिता जी के पीछे ही खड़ी नारियल पानी पी रही थी।

श्वेता की बात का जवाब माँ ने दिया। बोलीं, ''बेटी! पिता जी बिल्कुल सही कह रहे हैं। हम इंसानों ने इस दुनिया क्या अंतरिक्ष तक को रहने लायक नहीं छेड़ा। जैसा तुम और स्वयं सोच रहे हो वैसा ही सब सोचते हैं। इसलिए हर कोई पर्यटन स्थलों या नदी, समंदर, जंगलों और पहाड़ों पर जाता है तो ढेर सारा कचरा फैला कर आ जाता है। तुम ही नहीं दुनिया के बहुत सारे लोग समुद्र को कचरा फेंकने की जगह समझते हैं। यही कचरा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से बाढ़ और हवा के माध्यम से हम तक वापस आ जाता है। बारिश का सीधा संबंध समुद्र से है। पेयजल हो या हमारे जंगल या खेत–खलिहान इन सबके लिए हमें बारिश पर ही निर्भर होना पड़ता है। इसके अलावा समुद्र जब ज्यादा प्रदूषित हो जाता है तो उसकी कार्बन सोखने की क्षमता भी प्रभावित होती है। हर वर्ष न जाने कितने समुद्री जीव इस प्रदूषण की वजह से मर जाते हैं, सो अलग।''

माँ और पिता जी की बातों को सुनकर स्वयं और श्वेता दोनों गंभीर हो गए।

श्वेता ने पूछा– ''लेकिन माँ! कार्बन डाइऑक्साइड तो पेड़–पौधे सोखते हैं न? और वही हमें ऑक्सीजन देते हैं।''

पिता जी बोले– ''तुम्हें शायद पता नहीं पेड़ों में भी अधिक ऑक्सीजन हमें समुद्रों से प्राप्त होती है। लेकिन कार्बन भी यह तभी सोख पाएँगे जब हम इन्हें साफ रखेंगे और इन्हें एसिडिक नहीं होने देंगे।''

स्वयं ने पूछा– ''पिता जी! क्या हमारे इतने विशाल समुद्र प्रदूषित हो गए हैं?''

''बिल्कुल! इतने कि हम जो पानी घर में पीते हैं उसमें भी अति सूक्ष्म हानिकारक तत्व और प्लास्टिक मिला हुआ होता है। समुद्रों के प्रदूषित होने से इसमें उपस्थित छोटे–मोटे जीवों की तो क्या बिसात, १८ फुट लंबी व्हेल शार्क तक मरी हुई पाई गई है। इस व्हेल के पाचन तंत्र में प्लास्टिक की चम्मच फंसी हुई मिली थी। अंटार्कटिका का महाद्वीप से लिए गए पानी के नमूनों में प्लास्टिक के छोटे–छोटे टुकड़े पाए गए थे। तूफान के बाद हमारे विभिन्न राज्यों के समुद्रतटीय क्षेत्रों में प्लास्टिक के कचरे का ढेर मिलता है। शहरों के नदी नाले भी समुद्र तक गंदगी और कचरा पहुँचा देते हैं। अनुमान है कि प्रति वर्ष १३ मिलियन टन प्लास्टिक समुद्र के पानी में मिल जाता है। एक अध्ययन में तो यह भी पता चला है कि एशिया के नदियाँ दुनिया का दो तिहाई प्लास्टिक कचरा समुद्र में ले जाती हैं। पर्यावरण के साथ–साथ इससे आर्थिक नुकसान भी बहुत होता है। अनुमान है कि समुद्री तटों की साफ–सफाई पर हर वर्ष १३ बिलियन डॉलर खर्च हो जाता है।'' श्वेता और स्वयं स्थिति की गंभीरता को समझ चुके थे।

माँ ने कहा– ''बेटा! तुम्हें टोकने के पीछे यही कारण था। क्या तुम्हें पता है कि समुद्री पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने में माइक्रोप्लास्टिक का बड़ा योगदान है।''

''माइक्रोप्लॉस्टिक? यह क्या होता है?'' बहन–भाई ने एक साथ प्रश्न किया।

माँ ने कहा– ''माइक्रोप्लास्टिक शब्द का उपयोग सबसे पहले २००४ में पर्यावरण विज्ञानी रिचर्ड थॉमसन ने किया था। वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध के अनुसार समुद्री जीव एक सामान्य पॉलिथीन बैग के १०,००,००० माइक्रोस्कोपिक टुकड़े कर सकते हैं। ये टुकड़े समुद्री जीवों के आहार का हिस्सा बनकर उनकी मृत्यु का कारण बन जाते हैं। भारत सहित १४ देशों में पीने के पानी का परीक्षण करने पर पाया गया कि ८३% पानी पीने के पानी में माइक्रोप्लॉस्टिक शामिल है। इसे सामान्य आँखों से देख पाना संभव नहीं।''

''यह तो बहुत खतरनाक स्थिति है?'' स्वयं ने परेशान होते हुए कहा।

''हाँ! यदि हम नहीं संभले तो आने वाला समय और भी खतरनाक हो सकता है। एक अध्ययन में पता चला है कि वर्ष २०५० तक समुद्री पानी में मछलियों से अधिक प्लास्टिक होगा। हो सकता है कि मछलियों का शरीर ही प्लास्टिक जैसा हानिकारक हो जाए। सोच लो तब हमारी क्या स्थिति होगी। तब कुछ करने को बचेगा भी या नहीं कोई नहीं जानता। इसलिए हमें अभी से सावधान हो जाना चाहिए।''

स्वयं और श्वेता माँ–पिता जी की बातों का अर्थ समझ चुके थे और प्रण कर लिया था कि अब से वे इधर–उधर कचरा नहीं फैलाएँगे और साथ ही अपने मित्रों को भी इसके लिए जागरूक करेंगे।

– कोलकाता (प. बंगाल)

बैलगाड़ी

– सम्यका अग्रवाल

देखो–देखो गाँव में चलती मेरी बैलगाड़ी है,
सबसे अच्छी, सबसे प्यारी, सबकी यही दुलारी है।

झाँकोगे इतिहास के पन्नों में इसको तुम पाओगे,
ट्रैक्टर की यह दादी अम्मा, आज भी इसको पाओगे।
पहिये के इतिहास में ये तो सबसे पहले आई है,
देखो–देखो गाँव में चलती मेरी बैलगाड़ी है।।

आगे–आगे बैल चलते, पीछे लगते पहिये दो,
कहीं भी जाना हो तो बस, गाड़ीवान को बोल दो।
आज भी खलिहानों–खेतों में सबसे यही अगाड़ी है,
देखो–देखो गाँव में चलती मेरी बैलगाड़ी है।।

ना पेट्रोल का खर्चा लगता, ना लाइसेंस की झंझट है,
नहीं रोकता पुलिस वाला, ना ट्रैफिक की खटपट है।
इसको समझे जो भी कम, वो सबसे बड़ा अनाड़ी है,
देखो–देखो गाँव में चलती मेरी बैलगाड़ी है।।

– इन्दौर (म. प्र.)

बाल कविता संग्रह लोकार्पित

१७ अप्रैल। इंदौर में वरिष्ठ लेखिका प्रेम मंगल की बाल कविताओं के संग्रह 'मेहेर' का लोकार्पण हुआ। संस्मय प्रकाशन द्वारा आयोजित इस समारोह में मुख्य अतिथि पोस्ट मास्टर जनरल बृजेश कुमार ने कहा कि आज के दौर में बच्चों के लिए और अधिक रचनाएँ लिखने की आवश्यकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता 'देवपुत्र' के कार्यकारी संपादक गोपाल माहेश्वरी ने की। उन्होंने कहा कि भारत में कवि परंपरा ऋषि परंपरा है, जो मनुष्य है, जो भाव–युक्त है उसके भीतर कवित्व उपस्थित है। बाल साहित्य पढ़ने में भले आसान लगता है किंतु इसकी रचना करना कठिन होता है। विशेष अतिथि सहायक निदेशक (डाक) राजेश कुमावत ने अपने वक्तव्य में कहा कि कवि शब्द शिल्पी होता है, जो कल्पना से मूर्ति गढ़ता है। कार्यक्रम में लेखिका प्रेम मंगल को 'दीया मेरी भावना' पुस्तक के लिए 'संस्मय सम्मान २०२२' से सम्मानित किया गया।

चित्रकथा-

दोस्त

दो दोस्तों में बात छिड़ी ·
चलो मान लो, अगर तुम्हारे पीछे शेर लग जाए तो तुम कैसे बचोगे?

मैं पेड़ पर चढ जाऊंगा.
अगर आस-पास कोई पेड़ न हो तो ?

तो मैं नदी में कूद जाऊंगा
अगर वहां कोई नदी न हो तो ?

..मैं किसी मकान में घुस जाऊंगा.
मानो कोई मकान भी न हो तो?

तो तुमसे यह जानना चाहूंगा तुम मेरे दोस्त हो या शेर के?

राजकीय मछलियाँ

केरल की राजकीय मछली

कारीमीन

– डॉ. परशुराम शुक्ल

दक्षिण भारत की यह मछली,
सबके मन को भाती।
नदियों, कुण्डों, तालाबों से,
खेतों तक मिल जाती।।

रंग कत्थई–भूरा, पीला,
काले पट्टे वाला।
अंडाकार बदन अति सुन्दर,
लगता बड़ा निराला।।

कीट–पतंगे पानी वाले,
बड़े शौक से खाती।
और न मिलने पर पत्तों से,
अपना काम चलाती।।

रुके हुए पानी के तल में,
अपना नीड़ बनाती।
अंडे देकर सेती उनको,
जीवन का सुख पाती।।

तालाबों में बने पालतू,
लाभ हमें पहुँचाती।
किन्तु प्रदूषण के कारण यह,
छोटी होती जाती।।

– भोपाल (म. प्र.)

लघुकथा

दो मुस्कान

– राम मूरत 'राही'

पाँच वर्षीय मधु दोपहर के समय तेज धूप में सिटी बस से उतरकर अपनी माँ के साथ पैदल, पास ही स्थित अपने घर की ओर जा रहा था। तभी उसने देखा लगभग उसकी ही आयु का एक लड़का अपनी माँ के साथ पैदल सामने से आ रहा था। उसकी माँ एक छोटे–से बच्चे को गोद में लिये हुए थी।

उस गरीब–सी दिखने वाली महिला और उस लड़के के पैर में चप्पल नहीं थी। आग की तरह तप रही सड़क पर चलते हुए उस लड़के के पैर जल रहे थे, जिसके कारण से वह रो रहा था और अपनी माँ से बार–बार गोदी में लेने को कह रहा था।

यह देखकर मधु को उस लड़के की हालत पर तरस आ गया और फिर उसने बिना अपनी माँ से पूछे तुरन्त अपनी चप्पलें उतारकर उस लड़के को दे दी।

लड़का चप्पल पाकर चुप हो गया और फिर उसने मुस्कुराकर मधु की ओर देखा। मधु भी उसे देख मुस्कुरा दिया।

जब मधु अपनी माँ के पास पहुँचा तो उसकी माँ ने थोड़ा नाराज होते हुए कहा– ''क्यों, तुमने उसको अपनी चप्पलें क्यों दे दी?'' अब तेरे पैर जलेंगे नहीं क्या?''

''माँ! मेरे पैर तो थोड़ी देर ही जलेंगे ना? उस लड़के के तो....।''

– इन्दौर (म. प्र.)

रवि लायट् का विस्मयकारी भारत

बिहार में कैमूर ज़िले के भगवानपुर अंचल में पवारा पहाड़ी पर स्थित है अद्भुत मुंडेश्वरी मंदिर जहां स्थापित देवी की प्रतिमा की पूजा में पशु बलि की एक बिलकुल अनोखी प्रथा है ।

दो हज़ार वर्षों से भी अधिक प्राचीन माने जाने वाले इस मंदिर में विशेष पूजा के दौरान देवी को बलि हेतु बकरा अर्पित तो किया जाता है परन्तु उसका जीवन समाप्त नहीं किया जाता। है न पूरीतरह असामान्य व अनुकरणीय बात !

97 वर्ष की आयु में भला क्या कोई स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल करने के बारे में सोच सकता है ? जी, बिलकुल सोचा और सोचकर सच कर डाला 1 अप्रैल, 1920 के दिन पैदा हुए राजकुमार वैश्य ने, जिन्होंने सन 2015 में नालंदा ओपन यूनिवर्सिटी से एम.ए. (अर्थशास्त्र) में प्रवेश लिया और 97-98 वर्ष की उम्र में इसे पूरा कर दिखाया, यह सिद्ध करते हुए कि उम्र तो केवल एक संख्या है।

भारतीय रेलवे का एक स्टेशन ऐसा भी है जो कहने को तो जंक्शन है पर यहां यात्रियों के लिए कोई ट्रेन नहीं रुकती, न एक्सप्रेस न ही पैसेंजर ! जी हां, ऐसा ही है छपरा ग्रामीण जंक्शन परन्तु इतना जरूर है कि यहां से मालगाड़ियों पर पार्सल आदि की चढाई- उतराई होती रहती है।

जयपुर (राज.) में सिटी पैलेस के एक भाग के रूप में इस्लामी मुगल और हिन्दू राजपूत वास्तुकला के मिश्रण से बने 953 झरोखों वाले पांच मंजिले और 50 फीट ऊंचे, बिना किसी नींव के निर्मित हवा महल को विश्वभर में सबसे ऊंचा और अपनी विशेषता के लिए बेजोड़ संरचना माना जाता है।

© gyanhm@gmail.com / 8077554501

प्रसंग–इस वर्ष २ जून हिंदू साम्राज्य दिनोत्सव

एक अद्भुत राज्याभिषेक

– रामचंद्र शौचे

३४९ वर्ष पूर्व संपन्न हुआ वह राज्याभिषेक था संगठित समाज को समर्थ बनाने एवं हिन्दू जाति का रक्षक बनकर धर्म जागरण का अलख जगाने का। केवल ४४ वर्षीय उस हिन्दवी स्वराज्य संस्थापक छत्रपति शिवाजी का अद्वितीय राज्याभिषेक ज्येष्ठ शुक्ल १३ शके १५९६ अर्थात् ६ जून वर्ष १६७४ के दिन महाराष्ट्र के रायगढ़ दुर्ग पर उत्साह से संपन्न हुआ था।

बचपन से ही शिवाजी हिंदुत्व के प्रखर अभिमानी थे। किशोर अवस्था में शिवा ने अपने मित्रों की सशक्त विशाल टोली बनायी। उन्हें धर्म और देशभक्ति के पाठ सिखाये एवं विविध शस्त्र संचालित करने में निपुण बनाया। तरुणाई में ही तोरणा गढ़ पर आक्रमण करके अपने पराक्रम से उसे जीता और जनता जनार्दन तक संगठन का उद्देश्य पहुँचाया। अपने ही समाज के असंतुष्ट बंधु जो स्वार्थवश परकीय सत्ताधारियों से मिले थे उन्हें देशप्रेम की सीख देने का एक अवसर ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी को सम्पन्न उस राज्याभिषेक ने प्रस्तुत किया। कुतुबशाह और आदिलशाह जैसी बादशाही सल्तनत के छक्के छुड़ाने वाले हिंदू वीरों की योग्यता विश्व को बतलाने एवं देशवासियों में आत्मविश्वास जगाने हेतु वह शिवराज्याभिषेक एक साधन बना।

गो, ब्राह्मण प्रतिपालक हिंदू राजा के नाते शिवाजी राजा का नाम चला और हिन्दवी स्वराज्य स्थापना से हिंदुत्व का नाम भी चमका। शिवाजी का जीवन स्वदेश प्रेम, धर्मभक्ति, चतुराई, बुद्धिमत्ता, सद्व्यवहार, व्यक्ति की परख और संगठन करने की कुशलता आदि गुणों से प्रेरणादायी है।

उस समय हिंदू समाज को मुगल ठेस पहुँचा रहे थे। हमारी मान्यताओं पर चोट लगा रहे थे। श्रद्धा स्थानों को खण्डित कर रहे थे। भारतीय संस्कृति का

इस प्रकार अपमान करने वालों को परास्त करने के उद्देश्य से शिवाजी ने जनमानस में आत्मबल जगाया, सभी को संगठित भी किया। संगठित समाज समर्थ बना। शिवाजी का राज्याभिषेक होने पर एक आदर्श हिन्दू राजा की गरिमा समाज में स्थापित हुई। शिवाजी की सेना में जाति–धर्म–वर्ग भेद का कोई स्थान नहीं था। 'देशभक्ति सर्वोपरि' इसकी परख होती थी। उनकी सेना में इब्राहिम तोपची एक विश्वसनीय सरदार था।

आगरा के कारागृह से १७ अगस्त १६६६ को शिवाजी व संभाजी को सकुशल बाहर निकालने वाले मदारी मेहतर और हिरोजी फर्जन्द उनके अपने थे। प्रसंगवश औरंगजेब ने धर्मांतरित करके हिंदू वीर नेताजी पालकर का नामकरण मोहम्मद कुलीखान किया, ८ वर्ष तक दरबार में रखा और अंत में सरदार दिलेर खान के साथ शिवाजी पर आक्रमण करने के लिए दक्षिण में भेजा। वहाँ साधारण जनता में राष्ट्रभक्ति का व्यवहार देखकर मोहम्मद कुलीखान गद्‌गद् हो उठा। श्रद्धानवत होकर, वह शिवाजी से मिला। उसकी श्रद्धा देखकर शिवाजी ने उस 'कुलीखान' को फिर से 'नेताजी पालकर' बनवाकर १९ जून १६७६ को हिंदू धर्म की दीक्षा दिलवाई। वह पुन: एक हिंदू योद्धा बना।

राज्याभिषेक के पश्चात शिवाजी 'छत्रपत्रि' से सुशोभित हुए। वह दिन मात्र एक व्यक्ति के उत्थान को ही नहीं अपितु हिंदू संस्कृति के पुनरुत्थान का मंगल प्रसंग था। पवित्र नदियों के पुण्य जल से स्नान करके रत्नजड़ित सिंहासन पर आसीन शिवाजी राजा छत्रपति से अलंकृत हुए। तब निर्धनों का सत्कार किया गया और सैनिकों का सम्मान। विद्वानों को बहुमूल्य वस्त्र दिये गये और अतिथियों का स्वागत किया गया। उपस्थित असंख्य जनसमुदाय ने पुष्पों से राजा का स्वागत किया।

अँग्रेजों ने छत्रपति को मूल्यवान अँगूठी, बहुमूल्य कुर्सी, हीरे के दो कड़े और तीन अनमोल मोती भेंट स्वरूप देकर सम्मानित किया।

इस प्रकार संगठित शक्ति का प्रदर्शन करने वाला वह पुण्य दिवस हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव के रूप में हिंदू समाज को प्रेरणादायी रहा है। उस समय जो भी परिस्थितियाँ थीं, वही आज भी हैं। इसलिये भारत के प्रति अटूट श्रद्धाभाव तथा भारतीय सभ्यता का जागरण करना इसी संकल्प को लेकर उपरोक्त अलौकिक राज्याभिषेक का स्मरण प्रति वर्ष किया जाता है।

– रतलाम (म. प्र.)

कविता

बेर

– वागीश 'दिनकर'

ताजे मीठे ले लो बेर,
जल्दी से लो करो न देर।
इतना सुन शिब्बू आया,
बेरों पर मन ललचाया।
बेर बेचने वाले ने,
बेरों को कम था तौला।
मुझको कम क्यों देते हो,
शिब्बू उससे यूँ बोला।
वह बोला चालाकी से,
ले जाओ आसानी से।
शिब्बू कम पैसे देकर,
चलता बना बेर लेकर।
वह बोला पैसे कम हैं,
ये तो बेमानी होगी।
शिब्बू बोला– गिनने में,
तुमको आसानी होगी।

– पिलखुआ (उ. प्र.)

संकोच का परदा

– सनत

सुन्दरवन की शाला की पढ़ाई खूब जोरों से चल रही थी। क्योंकि वार्षिक परीक्षा पास आ गयी थी। आज सोमवार था और पढ़ाई का पहला दिन था। बीते शनिवार की अपेक्षा अधिक बच्चे पढ़ने को आये थे।

बच्चों के शिक्षक कालेश्वर भालू कक्षा में प्रवेश कर चुके थे। सबकी उपस्थिति लेने के बाद बोले– ''बच्चो! तुम लोगों को आज मैं नया विषय नहीं पढ़ाऊँगा।''

''तो क्या आचार्य जी! हम लोग मैदान में खेलने जायें?'' गल्लू खरगोन ने पूछा

''नहीं बिल्कुल नहीं। जरा–सी ढील मिलते ही तुम लोग उछलने लगते हो। आज मैं पिछले पढ़ाये हुए विषय के बारे में कुछ प्रश्न पूछूँगा।'' वे बोले।

अभी परसों ही उन्होंने 'फलों का राजा आम' पढ़ाया था। उन्हें उसी पर आधारित प्रश्न पूछने थे और सही उत्तर जानने थे। उन्होंने गल्लू की ओर ही पहले देखा और प्रश्न पूछा– ''आम को संस्कृत में क्या कहते हैं? बोलो।''

''आचार्य जी! संस्कृत में इसका दूसरा नाम रसाल भी है।'' गल्लू ने खड़े होकर तपाक से बताया।

''बहुत अच्छा! बैठ जाओ।''

''आम में मंजरी किस महीने में आती है और यह कब तक फलता है? अन्नू, तुम बताओ।''

अन्नू बंदर खड़ा हो गया और सोचने लगा... अक्टूबर.... नहीं दिसम्बर.... जनवरी..... माघ–फाल्गुन...। लगता है कोई और महीना है। आचार्य जी ने पढ़ाया तो था किन्तु कौन–सा। वह बता नहीं सका।

''आचार्य जी! आचार्य जी!'' उसी समय अन्नू के पीछे से हाथ हिलाती हुई पीहू गिलहरी बोली– ''मैं बताती हूँ।''

''हाँ–हाँ बताओ।''

''जनवरी! जनवरी के महीने में आम में मंजरी आती है। यह हिन्दी में माघ महीना होता है। आम मार्च–अप्रैल के महीने में खूब फलता है। मेरी माँ पुदीना, हरी मिर्च और नमक डालकर उसकी चटनी भी पीसती है। मैं खूब खाती हूँ।'' पीहू ने उत्तर दिया।

इस पर आचार्य जी बोले– ''बिल्कुल सही उत्तर। मेरा अगला प्रश्न है– आम किस देश का राष्ट्रीय फल है? चलो बीलू तुम बताओ।''

इस प्रश्न के उत्तर के लिये बीलू चूहा तैयार नहीं था। फिर भी उसने कुछ याद करने का प्रयत्न किया– नेपाल... चीन.... या भारत। हाँ भारत। लेकिन उसके मुँह से कुछ बोल ही नहीं फूटे।

''आचार्य जी! मैं बताता हूँ। मुझे उत्तर याद है।'' तभी उसकी बगल में बैठे गज्जू हाथी ने अपना हाथ ऊपर किया और उठकर बोला– ''आम भारत का राष्ट्रीय फल है। इसकी पचास से अधिक प्रजातियाँ पायी जाती हैं। यह एनकार्डियेसी कुल का पेड़ है। भारत का आम विदेशों तक भी जाता है।''

''शाबाश गज्जू! तुमने सही कहा। बैठ जाओ।'' आचार्य जी बोले।

फिर अन्नू और बीलू को डाँट लगायी, ''मेरे पढ़ाते समय तुम दोनों का ध्यान किधर रहता है? मैंने यह विषय हाल ही में तो पढ़ाया था। जब मैं पढ़ाता हूँ तब ठीक से कान देकर सुन लिया करो। परीक्षा सिर पर है और तुम दोनों कक्षा में बेसुध ऊँघते रहते हो। यह अच्छी आदत नहीं है।''

''जी... क्षमा करें आचार्य जी!'' अभी भी अन्नू और बीलू की जिव्हा पूरी तरह खुल नहीं रही थी।

''अरे अन्नू! उन प्रश्नों के तो बहुत ही सरल-से उत्तर थे। बीलू को भी पूछा गया प्रश्न का उत्तर बिल्कुल सरल था। तुम दोनों को बताना चाहिये था।'' गज्जू ने फुसफुसाया।

''क्या करें मित्र! आचार्य जी के सामने हमारी बोलने की हिम्मत नहीं जुटी। उत्तर तो हम दोनों बता भी सकते थे। किन्तु हम बहुत असमंजस में पड़ गये थे।'' अन्नू और बीलू बहुत निराश होकर बोले।

आचार्य जी के कान बड़े चौकन्ने थे। उन्हें बच्चों की खुसुर-फुसुर सुनायी पड़ गयी। इसके बाद वे हँसकर बोले- ''बच्चो! मैंने माना कि अन्नू और बीलू अच्छे विद्यार्थी हैं। पर उत्तर याद रहने के बाद भी इनका नहीं बोल पाना भ्रम और संकोच के कारण हुआ। इन दोनों के बीच भ्रम और संकोच का परदा आड़े आ गया। बहुतों के साथ ऐसी स्थिति बन जाती है।''

''तो क्या आचार्य जी! गलत उत्तर भी दे देना चाहिए था?'' अन्नू और बीलू ने प्रश्न किया।

''हाँ बिल्कुल! बाद में तुम दोनों को पछतावा तो नहीं होता न। हमारे विश्वास के साथ दिये गये उत्तर अधिकांश सही हो जाते हैं। मैं ऐसा नहीं बोल सकता। हमें ऐसी हीनभावना अपने मन में कभी नहीं लानी चाहिये। धाराप्रवाह बोलने की हिम्मत जुटानी ही चाहिये।'' आचार्य जी ने समझाया।

''आप एकदम ठीक बोल रहे हैं आचार्य जी। आगे हम लोग अपनी स्मृति को तेज रखेंगे। कोई असमंजस में नहीं पड़ेंगे। उत्तर सही-सही देने का प्रयास भरपूर करेंगे।'' सब बच्चों ने एक स्वर में कहा।

अब कक्षा में थोड़ी शांति हो गयी थी। दीवार की घड़ी में दोपहर का एक बज रहा था। इसी के साथ बच्चों के खाने की घण्टी बज गयी टन टन टन।

- रायगढ़ (छत्तीसगढ़)

सुभाषित

विद्या अमृत पीजिए, जन्म सुफलता पाय।
पशुता से ऊपर उठे, मनुज देव बन जाय।।

विद्यारूपी अमृत का पान करो तो जीवन सफलता प्राप्त करता है। मनुष्य पशुता से ऊपर उठकर देवत्व को प्राप्त करता है।

परीक्षित को शृंगी ऋषि का श्राप

– मोहनलाल जोशी

एक बहुत प्रतापी राजा थे। उनका नाम परीक्षित था। वे जंगल में शिकार करने गये। वे एक हिंसक पशु का पीछा करने लगे। वे बहुत ही घने जंगल में चले गये। वह पशु भाग गया। राजा ने वहाँ एक आश्रम देखा। आश्रम में शमीक ऋषि बैठे थे। शमीक ऋषि का मौनव्रत था। उन्होंने राजा की किसी बात का उत्तर नहीं दिया।

राजा को क्रोध आ गया। उन्होंने एक मरा हुआ सांप शमीक ऋषि के गले में डाल दिया। फिर राजा परीक्षित अपनी राजधानी चला गया।

शमीक ऋषि का पुत्र शृंगी बहुत तपस्वी था। उसे पता लगा कि राजा ने पिता जी के गले में सांप डाला है। शृंगी ऋषि ने राजा को शाप दिया। उसने कहा– तुम्हें सात दिन के भीतर विषधर साँप डँसेगा।

तक्षक नाग बहुत विषैला था। वह राजा परीक्षित की राजधानी जाने लगा। उसने सोचा– ऋषि के श्राप के कारण मैं राजा को मार दूँगा। सूने जंगल में उसे एक ब्राह्मण मिला। तक्षक नाग ने पूछा– ''तुम कहाँ जा रहे हो?'' ब्राह्मण ने कहा– ''राजा को नाग डँसने वाला है। मैं राजा को पुन: जीवित करूँगा। मुझे यह विद्या आती है।'' तक्षक ने उसे बहुत धन दिया। तक्षक ने कहा– ''तुम धन लेकर घर चले जाओ। राजधानी मत जाओ।''

राजा ने बहुत से अंगरक्षक बुला लिये। सातवाँ दिन था। राजा किसी से नहीं मिल रहे थे। तक्षक नाग ने एक छोटे से कीड़े का रूप बनाया। वह एक फूल में छिप गया। वह राजा के गले की माला तक पहुँच गया। तक्षक नाग ने राजा को डँस लिया। परीक्षित की मृत्यु हो गई।

राजा परीक्षित के पुत्र का नाम जनमेजय था। परीक्षित के बाद वह राजा बन गया। उसने अपने मंत्रियों से पूछा– ''मेरे पिता की मृत्यु कैसे हुई? वे बड़े धर्मात्मा थे।''

मंत्रियों ने तक्षक नाग की कहानी बतायी। जनमेजय ने कहा– ''वह नाग दुष्ट था। मैं सर्प यज्ञ करूँगा। संसार के सभी सर्प भस्म कर दूँगा।''

जनमेजय ने बहुत बड़ा यज्ञ किया। उसमें हजारों लोग आये। सारे सर्प आकाश में उड़कर यज्ञ में गिरते। सर्प भस्म होने लगे। तक्षक देवराज इन्द्र की शरण में चला गया। इन्द्र का आसन और तक्षक नाग उड़ने लगे। वे यज्ञ की अग्नि में गिरने ही वाले थे, तभी यज्ञ में आस्तीक नाम का ब्राह्मण आया उसने जनमेजय को प्रसन्न किया यज्ञ बंद हो गया। तक्षक और शेष बचे नाग जीवित रह गए।

– बाड़मेर (राजस्थान)

आलेख : पं. रामप्रसाद बिस्मिल जयंती ११ जून

चक्रवर्ती सम्राट

– तारा दत्त जोशी

समूचे भारत की भाँति शाहजहाँपुर के खिरनी बाग मुहल्ले में भी अँग्रेजों के अत्याचारों से मुक्त होने की चर्चाएँ दबी जबान से चल रहीं थीं। इसी मुहल्ले में पंडित मुरलीधर अपनी पत्नी मूलमती के साथ रहते थे। दोनों ही प्रभु राम के अनन्य भक्त थे। मुरलीधर कचहरी में स्टाम्प पेपर बेचते थे। एक दो बैलगाड़ियाँ भी किराए में चलती थी। व्यवसाय ठीक चल रहा था।

१८९७ का वर्ष, ज्येष्ठ महिने की प्रचण्ड गर्मी से धरती तप रही थी। मुरलीधर और मूलमती दोनों का ही निर्जला एकादशी का व्रत था। दोनों ही नित्य की भाँति पूजा–अर्चना करके अपने–अपने काम में लगे थे कि मूलमती के पेट में दर्द होने लगा। मुरलीधर कुछ व्यवस्था करने के लिए विचार कर ही रहे थे कि, अंदर से बच्चे की किलकारी की आवाज से घर गूँजने लगा। ईश्वर की कृपा पुत्र के रूप में प्रकट हुई।

मुरलीधर जी दो वर्ष पूर्व एक पुत्र को खो चुके थे। अत: किसी अनिष्ट के भय से ज्योतिषी को घर में बुलाया गया, ताकि यदि कोई अरिष्ट हो तो समय पर निवारण किया जा सके। ज्योतिषाचार्य ने बालक का लग्न काल देखकर तत्काल एक खरगोश की व्यवस्था करने को कहा। मुरलीधर जी खरगोश लाये तो ज्योतिषी बोले, इस खरगोश को बालक के सिर में सात बार घुमाकर आँगन में छोड़ दो। मुरलीधर जी ने वैसा ही किया। आँगन में खरगोश को छोड़ते ही, खरगोश ने आँगन के दो चक्कर लगाए और धड़ाम से गिर कर मर गया। सब लोग देखते ही रह गए।

मुहल्ले के सभी लोग जमा हो गए। सभी बच्चे के भविष्य के बारे में जानने को उत्सुक हो रहे थे। ज्योतिष ने बच्चे की ग्रहदशा की गणना के बाद बताया कि अभी तो बालक का अरिष्ट कट गया है। किन्तु भविष्य में और कष्ट है। यदि यह बालक उस कष्ट से उबर गया तो चक्रवर्ती सम्राट बनेगा और यदि नहीं भी उबर पाया तो पूरे विश्व के लोगों के मन में युगों–युगों तक शासन करेगा और अमर रहेगा।

मुरलीधर और मूलमती ने अपने आराध्य प्रभु राम के नाम पर बालक का नाम 'राम' रखा। माँ प्यार से बालक को 'रामू' कहकर पुकारती थी। रामू बचपन से ही नटखट और अपने निर्णय लेने के स्वभाव का था। उसका मन पड़ने में कम और खेल में अधिक रमता। पिता ने पढ़ने की समुचित व्यवस्था की। उन दिनों स्वरों को याद करने में 'उ' से 'उल्लू' पढ़ाया जाता था, किंतु रामू ने कई बार मार खाने के बाद भी 'उ' से 'उल्लू' उच्चारण नहीं किया। अंत में पिता ने रामू का प्रवेश उर्दू की पाठशाला में कर दिया और शाला में उसका पूरा नाम 'राम प्रसाद' था।

उर्दू पाठशाला में रामू ने उर्दू की अच्छी तरह शिक्षा ली और वह उर्दू में कविता और कहानियों का सृजन भी करने लगा। किन्तु कुसंगति के कारण यहाँ उसने कई ऐब भी सीख लिए। ऐब धीरे–धीरे इतने बढ़े कि 'राम प्रसाद' मिडिल परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गये।

उर्दू पाठशाला में अनुत्तीर्ण होने पर रामू का प्रवेश अँग्रेजी पाठशाला में किया गया और कुछ नियमित पूजा–पाठ का भी अभ्यास कराया जाने लगा। यहाँ से राम प्रसाद के जीवन में परिवर्तन हुआ। सारे ऐब पीछे छूटने लगे और रामू ब्रह्मचर्य का पालन करने लगा। अब वह एक बलिष्ठ और प्रतिभावान विद्यार्थी बन गया।

नियमित पूजा–पाठ व मंदिर जाने से विद्वान विचारकों से मुलाकातें होने लगी और व्यक्तित्व में

निरंतर निखार आने लगा। उर्दू में लिखने का शौक जारी रहा और राम प्रसाद ने उर्दू में अपना लेखकीय नाम 'बिस्मिल' रख लिया और अब वह रामू न रहकर 'राम प्रसाद बिस्मिल' हो गया।

राम प्रसाद कक्षा आठवीं में पढ़ रहे थे। इसी मध्य उन्हें स्वामी सोमदेव की सेवा का अवसर मिला। स्वामी जी प्रसिद्ध आर्य समाजी थे और राजनीतिक विषयों पर खुलकर चर्चा करते थे। स्वामी जी के संसर्ग से राम प्रसाद के मन में देश प्रेम की भावना जाग्रत हो गयी।

राम प्रसाद का मन देश सेवा के लिए छटपटाने लगा। अब वह उन्नीस वर्ष का युवा था। इसी बीच १९१६ में राम प्रसाद ने 'लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक' की लखनऊ में शोभायात्रा निकाली तो देश सेवा कार्य में लगे नवयुवकों का ध्यान राम प्रसाद की ओर गया और यहीं उसकी भेंट सोमदेव शर्मा, केशव चक्रवर्ती और मुकंदी लाल से हुई। इसी वर्ष उनकी पुस्तक 'अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम' भी प्रकाशित हुई। यह पुस्तक शीघ्र ही अँग्रेजी सरकार ने जप्त कर ली। अब राम प्रसाद बिस्मिल एक क्रांतिकारी बन चुके थे और उनका एक ही उद्देश्य था, भारत माता को अँग्रेजों के चंगुल से मुक्त करना। उनके विचारों से प्रभावित होकर लोग उनके साथ जुड़ने लगे थे। उन्होंने भारत माता की सेवा के लिए 'मातृवेदी' नाम का संगठन बना लिया। अब रामप्रसाद पूरे भारत में 'बिस्मिल' नाम से प्रसिद्ध हो चुके थे और हमेशा ब्रिटिश शासन के निशाने पर रहते थे।

भारत माता की सेवा करने के लिए धन की आवश्यकता थी। अत: धन एकत्र करने के लिए पुस्तकें बेचने का काम किया गया। इसी बीच बिस्मिल का संपर्क पं. गेंदालाल दीक्षित से हुआ। दीक्षित जी अध्यापक थे और उन्हें देश सेवा का जुनून था। उन्होंने 'शिवा जी समिति' नाम का एक संगठन बनाया था। बिस्मिल ने अपनी 'मातृवेदी' संगठन का विलय 'शिवा जी समिति' में कर दिया और अब दोनों मिलकर अँग्रेजों के अत्याचारों से भारत माता को मुक्त करने हेतु काम करने लगे।

इन दिनों मेनपुरी क्रांतिकारियों का प्रमुख केन्द्र था। क्रांतिकारी गुप्त तरीके से ब्रिटिश सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए काम कर रहे थे, किन्तु एक-एक मुखबिर की सूचना पर अँग्रेजों ने सभी पर मुकदमा ठोक दिया और सजा सुनाई। किन्तु बिस्मिल अँग्रेजों के हाथ नहीं आये और यमुना नदी में कूद कर अंदर ही अंदर तैर कर पार निकल गए और भूमिगत हो गए। भूमिगत होने के बाद भी देशसेवा का कार्य जारी रहा। इस दौरान बिस्मिल ने गूजरों के जानवर चराने का काम किया और अपना क्रांतिकारी उपन्यास 'बोल्सेविकों की करतूत' लिखा और अरविंद घोष की बांग्ला पुस्तक 'यौगिक साधन' का हिन्दी अनुवाद किया।

भूमिगत रहने के मध्य बिस्मिल एक स्थान पर अधिक दिनों तक नहीं ठहरते और वेश बदलते रहते थे। जिससे कोई भी उन्हें नहीं पहचान पाता था। और तो और उनकी सगी बहिन 'शास्त्री देवी' भी उन्हें अपने गाँव में नहीं पहचान पाई। १९१८ में बिस्मिल ने अँग्रेजी पुस्तक 'ग्रेण्ड मदर ऑफ रशियन

रिवाल्यूशन' का 'कैथेराइन' (स्वाधीनता की देवी) नाम से हिंदी अनुवाद किया। यह पुस्तक उनके साथियों को बहुत पसंद आई। वास्तव में बिस्मिल इन पुस्तकों से जहाँ एक ओर अपने साथियों को देश सेवा के लिए प्रेरित कर रहे थे, वहीं दूसरी ओर इनकी बिक्री से प्राप्त धन का उपयोग भी देश सेवा में हो रहा था।

इसी बीच सरकार ने मैनपुरी के दोषियों की सजा माफ कर दी और बिस्मिल अपने गाँव में आकर व्यापार करने लगे। किन्तु मन हमेशा देश सेवा में रहता था। १९२० में उनकी भेंट काँग्रेस के कोलकाता अधिवेशन में लाला लाजपतराय से हुई। लाला जी ने जब उनकी लिखी पुस्तकें देखी तो वे बहुत प्रभावित हुए। व्यापार छूट गया और राम प्रसाद पुन: देश सेवा में जुट गए और गाँधी जी के आह्वान पर असहयोग आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

किन्तु दुर्भाग्य से १९२२ में चौरी-चौरा कांड हो गया और गांधी जी ने आन्दोलन वापस ले लिया। गाँधी जी के आंदोलन वापस लेने से युवा दिलों में जबरदस्त ठेस पहुँची। युवा क्रांतिकारियों ने 'हिन्दुस्थान रिपब्लिकन एसोसिएशन' नाम से नई पार्टी बना ली।

नई पार्टी में बड़ी संख्या में क्रान्तिकारी जुड़ने लगे। पार्टी का संविधान तैयार किया गया और अँग्रेजों से निपटने की रणनीति बनाई जाने लगी। अँग्रेजों ने भी दमनकारी नीति के अन्तर्गत पार्टी के सदस्यों को बड़ी संख्या में गिरफ्तार करना आरम्भ कर दिया। पार्टी के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए धन की आवश्यकता थी।

७ अगस्त १९२५ को बिस्मिल के घर में एक अकस्मात बैठक बुलाई गई और सरकारी खजाने को लूटने की योजना बनी। ९ अगस्त १९२५ को बिस्मिल के नेतृत्व में असफाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी, चन्द्रशेखर आजाद, शचीन्द्र नाथ बख्शी सहित दस क्रान्तिकारी सहारनपुर-लखनऊ पैसेन्जर गाड़ी में सवार हुए और लखनऊ के पास काकोरी नामक स्थान में गाड़ी को रोककर खजाना लूट लिया। दूसरे दिन यह घटना पूरे संसार में फैल गई और अँग्रेजों ने क्रान्तिकारियों की धर-पकड़ शुरू कर दी। शीघ्र ही बिस्मिल सहित चालीस क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार किया गया और अभियोग लगाकर मुकदमा चलाया गया।

क्रांतिकारियों को अपने मुकदमे की पैरवी के लिए वकील रखने को कहा गया। बिस्मिल को साधारण वकील दिया गया। किन्तु उन्होंने उसकी सेवा नहीं ली और स्वयं अपने मुकदमे की पैरवी करने लगे। उनकी जोरदार तर्क क्षमता को देखते हुए जज ने पूछा- ''श्रीमान बिस्मिल! आपने किस विश्वविद्यालय से कानून की डिग्री ली है?'' बिस्मिल ने यह कहकर जज की बोलती बंद कर दी कि, ''महोदय! सम्राट बनाने वाले को किसी डिग्री की आवश्यकता नहीं होती। क्लाइव के पास भी कोई डिग्री नहीं थी।''

बिस्मिल का उत्तर सुनकर अदालत ने उन पर स्वयं की जिरह करने पर पाबंदी लगा दी। किन्तु बिस्मिल ने हार नहीं मानी और लिखित जिरह शुरू की। अदालत को विश्वास नहीं हुआ कि, ये तर्क

बिस्मिल ने स्वयं लिखे होंगे। अंत में वही वकील उनको दिया गया जो उन्होंने मना किया था।

सभी को यह पहले ही पता था कि मुकदमे का निर्णय क्या होने वाला है। अदालत ने अपने निर्णय में बिस्मिल, अशफाक और लाहिड़ी को फाँसी की सजा सुनाई। १८ दिसम्बर को माता से अंतिम भेंट के समय जब जननी की कुछ सेवा न कर पाने के कारण भावुक बिस्मिल की आँखें भर आई तो माँ बोली! ''बेटा! यदि मृत्यु से इतना भय था तो यह रास्ता क्यों चुना?'' तुरंत बिस्मिल ने एक शांत मुस्कान से माँ को विदा करते हुए अंतिम प्रणाम किया।

१९ दिसम्बर १९२७ को फाँसी के फँदे पर चढ़कर बिस्मिल ने कहा–

''सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजु ए कातिल में है।''
''मैं ब्रिटिश साम्राज्य का पतन चाहता हूँ।''

बिस्मिल जो पहले ही सारे भारत वासियों के दिलों में गहरी पैठ बना चुके थे। अपनी मृत्यु के बाद हर दिल के सम्राट बन गए। उनकी अंतिम यात्रा में लाखों की भीड़ जमा हुई और पूरा देश स्तब्ध था और हर आँख में आँसू थे। ज्योतिषी की भविष्य वाणी सच साबित हुई और बिस्मिल ऐसे चक्रवर्ती सम्राट बने जो लोगों के दिलों में राज करते थे और राज करते रहेंगे।

– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

कैप्टन उम्मेदसिंह माहरा

५ जुलाई १९७१ की रात। नागालैण्ड की ऊँची–नीची ढलान व चढ़ावों से भरपूर पहाड़ी रास्ते। कल–कल करते नाले जो दिन में मनोरम लगने पर रात में भयंकर शोर करते बह रहे थे। शाम के साढ़े पाँच बज रहे थे कि कैप्टन उम्मेद सिंह के ६० सदस्यों के सैनिक दल ने इसी रास्ते पर पैदल ही आगे बढ़ना आरंभ किया। कल ही नागालैंड के एक गाँव से कैप्टन ने एक व्यक्ति पकड़ा था जो आसपास छुपे उग्रवादियों को भोजन सामग्री व हथियार पहुँचाने में लिप्त था। उसी की निशान देही पर यह दल उग्रवादियों के घने जंगली क्षेत्र में बने अड्डे पर छापामारी हेतु जा रहा था। २१ जनवरी १९४२ को उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के जनकनडे गाँव में श्री कुँवर सिंह जी के घर जन्मे श्री उम्मेद सिंह माहरा ११ जून १९६७ को भारतीय सेना की १९वीं राजपुताना राइफल्स में आए। वे ही आज इस छापामार दल के नेतृत्वकर्त्ता थे।

चलते–चलते १२ घंटे बीत गए। सुबह हो रही थी। घड़ी पौने छः का समय बता रही थी और इनका लक्ष्य ५०० मीटर दूर रह गया था। दल तीन टुकड़ियों में बटा, दो एक साथ उग्रवादियों को दबोचेंगे तीसरी आपातकाल में जहाँ आवश्यक होगा वहाँ पहुँचेंगी। ये योजना की। कैप्टन माहरा की टुकड़ी अब ३० मीटर दूर थी कि उग्रवादियों को आहट हुई। दनादन गोलियाँ चलने लगीं। विद्रोहियों का संतरी मारा गया। पर कैप्टन के दाएँ हाथ व पेर में शत्रु की गोलियाँ धँस गईं पर वे अपनी स्टेनमशीन कारबाइन लेकर लड़ते रहे। वे अपने साथियों को प्रोत्साहित कर रहे थे। दूसरी टुकड़ी भी आ पहुँची। शत्रु के अड्डे पर केवल लाशें, और छोड़े गए हथियार व प्रमाण थे उग्रवादियों को भागना पड़ा। कैप्टन माहरा बहुत गंभीर घायल थे वे लौटे पर जीवित नहीं रह सके। मरणोपरांत अशोकचक्र ने उनकी वीरता का मान बढ़ाया।

घमंड सही नहीं

चित्रकथाः देवांशु वत्स

सिक्का

– राजीव सक्सेना

''करूए ले लो, गुल्लक ले लो....'' ठेले पर मिट्टी के बर्तन और खिलौने बेचने वाला घूम-घूमकर आवाज लगा रहा था और कॉलोनी में कोई भी उससे कुछ नहीं खरीद रहा था।

दादा जी के कानों में उसकी आवाज पड़ी तो वे बोले– ''बेटा रोहन! जाओ, तुम इस ठेले वाले से एक गुल्लक खरीद लो... मैं पैसे दे रहा हूँ।''

''गुल्लक?!'' रोहन ने कुछ आश्चर्य चकित होकर कहा।

''हाँ, गुल्लक... जाओ, देर मत करो। नहीं तो ठेले वाला चला जायेगा।''

''लेकिन गुल्लक का आप क्या करेंगे दादा जी?'' दादा जी से पैसे थामते हुए रोहन ने पूछा।

''मैं कुछ नहीं करूँगा। अब इस आयु में मुझे गुल्लक का क्या करना है?''

''फिर क्यों खरीदवा रहे हैं गुल्लक?''

''यह मैं तुम्हारे लिए खरीदना चाहता हूँ।''

''लेकिन मैं गुल्लक का क्या करूँगा?'' रोहन ने फिर दादा जी से तर्क किया।

''जिससे तुम्हें पैसा जोड़ने की आदत पड़े। फिर देखो, उस बेचारे से कोई भी कुछ नहीं खरीद रहा है। जब से यह चीन वालों ने देवी-देवताओं की मूर्तियाँ और खिलौने हमारे देश में बेचने शुरु किये हैं इस बेचारे गरीबों की मुसीबत हो गयी है जबकि हमें इनसे ही कुछ न कुछ अवश्य खरीदना चाहिए....।''

''ओह अब समझा... लेकिन दादा जी अब तो मेरी आयु का कोई भी बच्चा न तो गुल्लक रखता है न उसमें पैसे जोड़ता है। मेरे मित्र को जब मेरी गुल्लक के बारे में पता चलेगा तो वे मेरी मजाक उड़ायेंगे... मुझे पिछड़ा हुआ समझेंगे...।''

''समझने दो, मैं तो बस यही कहूँगा कि जब जागो तभी सवेरा। बचत की आदत जितनी जल्दी पड़ जाए उतना ही अच्छा है बड़े होने पर यह तुम्हारे बहुत काम आयेगी...।'' दादा जी ने कहा।

रोहन जानता था दादा जी की बात में कोई न कोई सीख या भलाई छिपी होती है। वे यूँ ही किसी बात के लिए आग्रह नहीं करते।

रोहन हथियार डालने वाले अन्दाज में बोला– ''ठीक है, दादा जी! मैं गुल्लक में सिक्के अवश्य जोड़ूँगा...।''

एक दिन! ऋषिकेश में रहने वाले दादा जी के बचपन के मित्र खन्ना जी उनसे मिलने घर आये। खन्ना जी दादा जी की आयु के ही थे।

''प्रणाम दादा जी!''

रोहन ने हाथ जोड़कर खन्ना जी का अभिवादन करने के साथ ही उनके पैर भी छुए।

''प्रणाम बेटा! जुग-जुग जियो!'' खन्ना जी ने रोहन को आशीर्वाद देते हुए कहा।

''यह मेरा पौत्र है, रोहन!'' दादा जी ने रोहन का परिचय खन्ना जी को देते हुए कहा।

''बड़ा संस्कारी है। आजकल की पीढ़ी में भला हम बूढ़ों को सम्मान देने की बात अब कहाँ दिखायी पड़ती है? बड़े अच्छे संस्कार दिये हैं तुमने रोहन को।'' खन्ना जी ने कहा।

फिर वे अपने कुर्ते की जेब टटोलते हुए एक पुराना सिक्का रोहन को थमाते हुए बोले- ''लो बेटा! इस बूढ़े के पास तुम्हें देने के लिए इस समय तो और कुछ नहीं हैं। तुम यह सिक्का रखो...।''

''ल.... ल.... लेकिन दादा जी, इसे देने की क्या आवश्यकता है? आपका आशीर्वाद ही मेरे लिए काफी है।'' रोहन ने उस पुराने सिक्के को देखकर कुछ झिझकते हुए कहा।

दरअसल, रोहन इस पुराने सिक्के को लेना ही नहीं चाह रहा था।

''लो बेटा! रख लो यह सिक्का। यह मुझे ऋषिकेश में नदी के किनारे घूमते हुए गंगा की रेती में मिला था। इसे मेरा आशीर्वाद समझ लो...।'' खन्ना जी ने आग्रहपूर्वक रोहन को सिक्का को देते हुए कहा।

''रख लो रोहन! जब खन्ना जी इतने प्यार से आशीर्वाद के तौर पर यह सिक्का दे रहे हैं तो ले लो। वैसे भी तुम अपनी गुल्लक में सिक्के जोड़ते ही हो न...।'' जब दादा जी ने कहा तो रोहन ने खन्ना जी का दिया सिक्का कुछ अनमने भाव से ले लिया और जल्दी ही इसे गुल्लक के पेट में पहुँचा दिया।

रोहन के विद्यालय में पुराने सिक्कों की प्रदर्शनी लगी थी। प्रदर्शनी में देश के जाने-माने विशेषज्ञ और पुरातत्व शास्त्री भी आने वाले थे।

कक्षाध्यापक शर्मा जी ने रोहन और उसके सहपाठियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा- ''बच्चो! मैं चाहता हूँ कि तुम सभी सिक्कों की इस प्रदर्शनी में भाग लो और सिक्कों के अपने संग्रह को प्रदर्शित करो। जिसका संग्रह सबसे अच्छा होगा उसे पुरस्कार के रूप में विद्यालय की ओर से पाँच हजार रुपये का नकद पुरस्कार भी दिया जायेगा।''

रोहन रोचने लगा- ''गुल्लक में मेरे पास ढेरों सिक्के तो हैं लेकिन पता नहीं उसमें कुछ विशेष सिक्के हैं भी या नहीं। फिर भी, मुझे इस प्रदर्शनी में अवश्य भाग लेना चाहिए।''

रोहन छुट्टी के बाद घर आया तो सीधे अलमारी में रखी उसने गुल्लक फोड़ी। खन्-खन् करते हुए ढेरों सिक्के फर्श पर बिखर गये।

''क्या बात रोहन?! यह गुल्लक तुमने क्यों फोड़ डाली! दादा जी ने तो तुम्हें इसमें सिक्के जोड़ने के लिए कहा है।'' माँ ने पूछा।

उत्तर में रोहन ने विद्यालय में अगले दिन से लगने वाली सिक्कों की प्रदर्शनी की बात माँ को बता दी।

''ठीक है रोहन! तुम्हें इस प्रदर्शनी में अवश्य भाग लेना चाहिए।'' माँ ने कहा।

विद्यालय में सिक्कों की प्रदर्शनी लगी तो मित्रों के सहयोग से रोहन ने भी अपनी मेज सजा दी। लेकिन सिक्कों के अपने संग्रह को लेकर वह खास उत्साहित नहीं था।

आखिर वह क्षण आ ही गया जिसका सभी को बेसब्री से इंतजार था।

देश के जाने-माने सिक्का विशेषज्ञ और पुरातत्वशास्त्री छात्रों के संग्रह का निरीक्षण करते हुए रोहन की मेज पर आये। वे प्रख्यात पुरातत्वविद् पद्मश्री डॉ. विष्णुश्रीधर वाकणकर के शिष्य थे।

अचानक उनकी पारखी नजरें एक सिक्के पर टिक गयीं। वे आँखें सिकोड़कर बारीकी से सिक्के को देखने लगे। उन्होंने सिक्के की ओर संकेत करते हुए पूछा- ''बेटा! यह सिक्का आपको कहाँ और कैसे मिला?''

रोहन ने देखा- यह वही सिक्का था जो दादा जी के मित्र खन्ना जी ने उसे आशीर्वाद के रूप में दिया था।

''आचार्य जी! यह सिक्का मुझे मेरे दादा जी के मित्र ने दिया था।'' रोहन ने बताया।

''बेटा! यह अत्यन्त दुर्लभ किस्म का सिक्का है जिसे गुप्त वंश के प्रतापी सम्राट ने जारी किया था। हमें अरसे से इसकी तलाश थी। अगर तुम चाहो तो हम इस सिक्के के बदले तुम्हें दो लाख रुपये नकद दे सकते हैं, यह राष्ट्रीय संग्रहालय की शोभा बढ़ायेगा।'' पुरातत्वशास्त्री ने कहा।

''दो लाख!'' रोहन को सहसा अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ।

वह बोला- ''आचार्य जी! मैं अपने दादा जी की इच्छा के बिना यह सिक्का आपको नहीं दूँगा।''

''ठीक है, जैसी तुम्हारी इच्छा।''

प्रदर्शनी समाप्त होने के बाद रोहन घर आया तो उसने सारी घटना विस्तार से दादा जी को सुनायी।

दादा जी बोले- ''मैं नहीं कहता था कि सिक्के जोड़ने की आदत बहुत काम की है। अब देखो, खन्ना जी के दिये, सिक्के से ही तुम लखपति बन गये।''

यह दुर्लभ सिक्का रोहन के लिए सचमुच एक धरोहर से कम नहीं था। उसने पुरातत्व विभाग को अपना सिक्का नहीं बेचा किन्तु विद्यालय की ओर से सर्वश्रेष्ठ संग्रह का पुरस्कार उसे अवश्य मिल गया।

अब रोहन दूने उत्साह से सिक्कों का संग्रह करने लगा।

- मुरादाबाद (उ. प्र.)

आदरणीय अष्ठाना जी,

नमस्कार। मार्च का देवपुत्र प्राप्त हुआ। 'गोपाल का कमाल' और 'बारहमासी दोहे' विशेष रूप से पसंद आए।

दीदी सरोजिनी कुलश्रेष्ठ जी के स्वर्गवासी होने के समाचार ने बहुत दु:खी किया। शकुंतला सिरोठिया दीदी के जाने के पश्चात् सरोजिनी जी ने मुझे बहुत प्यार दिया। (ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे।)

डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' 'देवपुत्र गौरव सम्मान' से सम्मानित हुए, योग्य व्यक्ति तक प्रतिष्ठित पुरस्कार पहुँचा। उन्हें बधाई

- डॉ. बानो सरताज,
यवतमाल (महाराष्ट्र)

पुस्तक परिचय

आत्मविश्वास का तावीज

मूल्य २३०/-

प्रकाशन-वनिका पब्लिकेशन्स
एन. ए. १६८ गली नं. ६,
विष्णु गार्डन, नई दिल्ली-११००१८

डॉ. लता अग्रवाल समकालीन हिन्दी बाल रचनाकारों में एक सुपरिचित नाम है। प्रस्तुत बाल कहानी संकलन में उनकी १९ बाल कहानियाँ हैं। विषय परम्परागत न होकर समसामयिक है एक तरह से नए युग के बचपन की अभिव्यक्ति। विषयानुकूल भाषा और समयानुकूल विषय वस्तुओं से समृद्ध यह संकलन पठनीय है।

माशी की जीत

मूल्य २००/-

प्रकाशन- साहित्यागार
धामाणी मार्केट की गली,
चौड़ा रास्ता जयपुर-३०२००३ (राज.)

वर्तमान युग की महिला बाल साहित्यकारों में डॉ. शील कौशिक एक सुख्यात हस्ताक्षर हैं। वर्तमान युग के बाल संदर्भों को मानवीय मूल्यों की सहज, सरल, सुबोध अभिव्यक्ति से सुगठित कर प्रस्तुत, ये १६ बाल कहानियाँ शील जी के उत्कृष्ट सृजन का आस्वाद कराती हैं।

बन्दर का मोबाइल प्रेम

मूल्य १६०/-

प्रकाशक-अद्वितीय
पब्लिकेशन, ४१, हसनपुर,
आई पी एक्सटेंशन,
पटपड़गंज, दिल्ली-११००९२

कल्पनाशीलता और कौतुक बाल रचनाओं की विशेष पहचान है डॉ. शील कौशिक की। ये १७ बाल कहानियाँ उनकी ऐसी ही जिज्ञासा जगाती मनोरंजन करती रचनाएँ हैं।

सात बाल एकांकी

मूल्य ३००/-

प्रकाशक-सूर्यभारती
प्रकाशन २५९६,
नई सड़क दिल्ली-०६

बालसाहित्य की विविध विधाओं में सतत् सृजनशील वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ. घमंडी लाल अग्रवाल वर्तमान युग के प्रथम पंक्ति के रचनाकार हैं। प्रस्तुत पुस्तक उनके ७ रोचक एवं मंचनयोग्य बाल एकांकियों का संकलन है। विषय हमेशा की भाँति नवीन, रोचक व बोधक भी।

मुन्ना धुन्ना पुन्ना

मूल्य ६०/-

प्रकाशक-पाथेय प्रकाशन
११२, सराफा वार्ड
जबलपुर- (म. प्र.)

के. पी. पाण्डेय 'वृहद्' जबलपुर की साहित्य भूमि के वरिष्ठ रचनाकार है। बाल साहित्य में लघुकथा अभी एक अल्प पोषित विधा है ऐसे में इसे स्थापित करने के कर्त्तव्य को सुन्दरता से सम्पन्न किया है इस बाल लघुकथा संकलन में। ये २४ बाल लघुकथाएँ चौबीस रंग बिखेरती सशक्त रचनाएँ हैं।

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

लाड़ली बहना योजना से बदलेगी महिलाओं की जिंदगी

'मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना मेरे दिल से निकली योजना है। बहनों के जीवन को सरल, सुखद बनाना ही मेरे जीवन का ध्येय है। बहनें सशक्त होंगी तो परिवार, समाज, प्रदेश और देश सशक्त होगा। यह योजना महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण, आत्म-विश्वास और स्वाभिमान बढ़ाने के लिए है।'

- शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

योजना का उद्देश्य

- महिलाओं के स्वावलम्बन और उनके आश्रित बच्चों के स्वास्थ्य एवं पोषण स्तर में सतत सुधार को बनाए रखना
- महिलाओं को आर्थिक रूप से अधिक आत्म-निर्भर बनाना
- परिवार स्तर पर निर्णय लिए जाने में महिलाओं की प्रभावी भूमिका को प्रोत्साहित करना

प्रत्येक पात्र बहन को प्रतिमाह 1000/- रुपये

पात्र हितग्राही को राशि का भुगतान उनके आधार लिंक्ड डीबीटी इनेबल्ड बैंक खाते में

25 मार्च से प्रारंभ हो गया है आवेदन भरवाना

आवेदन के लिए हर वार्ड और गाँव में लग रहे हैं शिविर

ई-के वाइ सी का शुल्क अदा कर रही है राज्य सरकार

योजना की पहली किस्त 10 जून को बहनों के खातों में होगी जमा

R. O. No.- D16024/23

सशक्त महिला-सशक्त परिवार-सशक्त समाज-सशक्त मध्यप्रदेश

नरेन्द्र मोदी

3 साल विकास के

शिवराज सिंह चौहान

मध्यप्रदेश की सिंचाई क्षमता में अभूतपूर्व वृद्धि

- पिछले 3 साल में 6 लाख हेक्टेयर से अधिक की नई सिंचाई क्षमता विकसित
- नर्मदा कछार की ₹ 24 हजार 500 करोड़ से अधिक लागत की 5 लाख 50 हजार हेक्टेयर से अधिक की सिंचाई क्षमता वाली 12 परियोजनाओं के निर्माण की शुरुआत
- ₹ 44 हजार 600 करोड़ से अधिक लागत की केन-बेतवा लिंक परियोजना
- देश की पहली वृहद प्रेशराइज्ड पाइप सिंचाई परियोजनाएँ-मोहनपुरा, कुंडालिया। अनुमानित ₹ 8500 करोड़ की लागत (2,85,000 हेक्टेयर सिंचाई की क्षमता, इस वर्ष 1,25,000 हेक्टेयर में सिंचाई)

सिंचाई क्षमता

R. O. No.- D16024/23

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३
आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०५/२०२३
प्रेषण तिथि ३०/०५/२०२३
प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

प्रदेश सरकार ने बढ़ाया कदम आत्मनिर्भर होंगी लाड़ली बहना

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना

- सशक्त नारी
- सशक्त परिवार
- सशक्त समाज
- सशक्त प्रदेश
- सशक्त देश

लाड़ली बहना योजना मेरे दिल से निकली योजना है। बहनें सशक्त होंगी तो परिवार, समाज, प्रदेश और देश सशक्त होगा। बहनों के जीवन को सरल, सुखद बनाना ही मेरे जीवन का ध्येय है। बहनें अपनी छोटी-मोटी जरूरतों और पैसों की आवश्यकता के लिए परेशान न हों, इसलिए हर महीने बहनों को एक-एक हजार रुपए उपलब्ध कराने की व्यवस्था योजना में की गई है।

– शिवराज सिंह चौहान

R. O. No.- D16024/23

पात्र लाभार्थी को ₹ 1000/- मासिक

हर वर्ष ₹ 12000/-

अगले 5 वर्ष में ₹ 60000/- तक की प्राप्ति संभव

उद्देश्य

- महिलाओं के स्वावलंबन एवं उनके आश्रित बच्चों के स्वास्थ्य एवं पोषण स्तर में सतत सुधार को बनाये रखना।
- महिलाओं को आर्थिक रूप से अधिक स्वावलंबी बनाना।
- परिवार के स्तर पर निर्णय लिये जाने में महिलाओं की प्रभावी भूमिका को प्रोत्साहित करना।

अधिक जानकारी के लिये

जिला कार्यक्रम अधिकारी, महिला एवं बाल विकास, स्थानीय निकाय/ग्राम पंचायत से संपर्क करें
वेबसाइट - cmladlibahna.mp.gov.in पर विजिट करें।

बहनों के हित में मध्यप्रदेश सरकार का विनम्र प्रयास

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना